

मालिकुलमुल्क इमाम मेहदी हज़रत रियाज़ अहमद गौहरशाही



रुख़सार-ए-रियाज़

तेरे जमाल से ऑखों को नशा हो जाये
तेरे ख्याल से लमहों को नशा हो जाये

(यूनुस अल्गौहर)

रियाज़

मालिकुलमुल्क

रैनके क़सरे रियाज़, मशकूरे बंदए रियाज़

शाहीन-ए-रियाज़

कोई क्या डराएगा इनको भला
जो गौहर की तेगेफ़सां हो गए
बताए जो यूनुस ने अग़राज़े गौहर
मक़ासद सब ही के अ़याँ हो गए

यूनुस अल्गौहर

वेबसाइट : www.GoharShahi.com

संकलित द्वारा
मेहदी फाउंडेशन इंटरनेशनल

Printed in Thailand
First Edition 500 Copies
17-07-2003

माशूकेमन हज़रत रियाज़ अहमद गौहरशाही तमहीद

शायेरी मुहब्बत के लतीफ ज़ज्बों की अककासी का ज़रीआ ठहरी। मुहब्बत के लतीफ ज़ज्बों को जहाँ नसर (गद्य) में बयान करने के लिए सैंकड़ों शब्दों की ज़रूरत होती है वहाँ शायेरी उन ज़ज्बों को चंद लफ़ज़ों में निष्ठायत नफ़सत से बयान कर देती है। एक अर्सा तक शायेरी महज़ मुहब्बत के ज़ज्बों के इज़हार का ज़रीया ही बनी लेकिन वक़्त के नशीबोफराज़ ने शायेरी को दीगर हक़्कायेक के इज़हार का ज़रीया भी बना दिया। इस तरह शायेरी का दामन कुशादःतर होता गया। शायेरी की अज़मतोअसमत को उश्शाक ने इश्क़ हकीकी से मामूर कर दिया। तसव्युफ़ के दकीक कुल्लियात उश्शाके हकीकी ने मनज़ूम अंदाज़ में पेश कर के शायेरी की तहारत को चार चौंद लगा दिये। हज़ूरपाक के दौर में अरबिस्तान में शोअरा का झोरोशोर था। एक से बढ़ कर एक आलिमो फ़ाज़िल मौजूद था और इसी बिना पर आलिमो फ़ाज़िल ने उलमा को घमंडी बना दिया था। इसी घमंड को खाकस्तर करने के लिए अल्लाह ने कुरान मजीद को मनज़ूम अंदाज़ में नाज़िल करके उन शोअरा के कलाम को मात दी। ज़भी तो उस दौर के शोअरा ने कुरानी मनज़ूम अंदाज़ और अल्फ़ाज़ की बेमिसाल तराकीब देखकर बरमला कहा कि यह तो निरी शायेरी है। हज़ूरपाक ने अरबिस्तान के वासियों को पैग़ाम्हे हक सुनाया, कुछ लोग हलका बगोशे इसलाम होकर तौहीद के मतवाले हुए और कुछ लोग हज़ूरपाक की शशिस्यत के सेहर में गिरफ़तार हो कर हुस्ने मुस्तफ़ा के असीर हुए। हुब्बे मुस्तफ़ा में गिरफ़तार कलूब ने इज़हारे मुहब्बत का ज़रीआ शायेरी बनाया। कहते हैं जब हस्सान बिन साबित हज़ूरपाक की शान में कसायेद लिखते तो हज़ूरपाक उनको मिम्बर पर बैठा कर कसायेद सुनते और कहा करते कि ‘‘जिब्राइल तू ज़मीन पर आ और हस्सान का साथ दे।’’

मुतअद्दिद फुकरा और औलिया उज़्ज़ाम ऐसे हैं जिन्होंने तालीमाते तसव्युफ़ की इशाअत के लिए फ़क़त शायेरी को ही ज़रीआ बनाया। जलालुद्दीन रुमी की मस्नवी तरीकत की तालीमात से मामूर है। उनके अकीदतमन्द कहते हैं कि मौलाना जलालुद्दीन रुमी की मस्नवी फ़ारसी का कुरान है। मौलाना जामी, शरफुद्दीन बसीरी, हाफ़िज़ शीराज़ी और शेख सज़्दी समेत कई आशिकाने मुहम्मद (स.) ने इज़हारेइश्क़ का ज़रीआ शायेरी को ही बनाया। जिनको पढ़कर आज भी असीराने इश्क़ रमूज़ इश्क़ सीख रहे हैं। वादिये कश्मीर के बुरुर्ग जनाब मुहम्मद बख़ा ने सैफ़ुल मलूक लिखकर तरीकत की मनज़ूम तालीम फरमाई। सुल्तान हक बाहू ने किसी शख्स को ज़ाहिर में फैज़ नहीं दिया अल्बत्ता अवियाते बाहू रकम फरमा कर करिशमाती मनज़ूम तालीमे फ़कर के ख़ज़ाने निछावर किये। अमीर खुसरू ने अपने पीरो मुर्शिद के इश्क़ की दास्तान का जामा भी शायेरी को ही बनाया। बाबा फ़रीद ने इश्क़े मुर्शिदी का अमीन शायेरी को ही बनाया। अल्लमा इकबाल ने मुसलमानों की हालते ज़ार देख कर बज़रिये शायेरी ही तख्ययुले मेहदी से इस कौम को बेदार करने की कोशिश की। अल्लमा इकबाल ने मुसलमानों को आमदे मेहदी और ज़हूरे मेहदी की निशानियों का शायेरी में इज़हार किया।

यही बजह है कि मेहदी अलमूतज़र सैयदना गौहरशाही ने किताब दीनेइलाही में चौद, सूरज और हज़ अस्वद की तसवीर के साथ अल्लामा इकबाल के उन मुतल्लुका निशानियों के आसार के हवाले दिये।

सबसे बढ़कर मेहदी अलमूतज़र सैयदना गौहरशाही ने भी शायेरी को इज़्ज़त बख़शी। माशूकेमन सैयदना गौहरशाही फ़रमाते हैं कि जब हम लाल बाग में मसरुफ़ इश्क़ थे तब ही असदुल्लाह ख़ाँ ग़ालिब और हज़रत अल्लामा इकबाल सरकार गौहरशाही से फैज़ हासिल करने के लिये हाज़िर हुए और फैज़ पाकर बेकरार अरवाह को करार नसीब हुआ। ग़ालिब और इकबाल को अपनी शायेरी का मुद्रदा और गौहर मतलूब मिल गया। मुहम्मद यूनुस अलगौहर के नहें कल्ब में भी हुस्ने गौहरशाही की किरन तुलूज़ हूई और उसने अपने इन लतीफ ज़ज़बात का ज़रीया भी शायेरी को ही बनाया। महसूस होता है कि यूनुस की शायेरी में माशूकेमन गौहरशाही के इश्क़ के ज़ज्बात ही नहीं बल्कि सैयदना गौहरशाही की जानिब से इल्का किये गये इसरार भी जलवागर हैं। मेरा ईमान है कि मुहम्मद यूनुस अलगौहर के हिदायत याफ़ता होने और उसकी शायेरी अमर होने के लिये यही काफ़ी है कि मेहदी अलमूतज़र सैयदना गौहरशाही ने यूनुस अलगौहर की ग़ज़ल के एक शेअर को दीने इलाही में शामिल कर दिया। दीने इलाही में शामिल शेअर दर्ज़ेल है।

चौद, सूरज क्या गवाही देंगे तेरी ऐ गौहर है सबूतेहक तेरा इस दिल में आ जाने का नाम

इस शेअर को दीने इलाही में शामिल करके सैयदना गौहरशाही ने तसवीक फ़रमा दी कि यूनुस के कल्ब में सरकार गौहरशाही का जलवा शम्माए इश्क़ रोशन किये हुए है। बहुत से लोग यूनुस को काफ़िर, मुल्हिद और गुस्ताख़ कहते हैं लेकिन हम समझते हैं कि सरकार गौहरशाही ने यूनुस अलगौहर के मुहब्बे गौहरशाही होने की तसदीक फ़रमा दी। लीजिये इस शायेरी से लुत्फ अंदोज़ हों और देखें कि हमारे दावे में कितनी सच्चाई है।

अमजद गौहर (अरब अमीरात)

मेहदी फाउंडेशन इंटर नेशनल

अपने पीरो मुर्शिद के इश्क की दास्तान का जामा भी शायरी को ही बनाया। बाबा फरीद ने इश्के मुर्शदी का अमीन शायरी को ही बनाया। अल्लामा इकबाल ने मुसलमानों की हालतेज़ार देखकर बज़रिया शायरी ही तख़्येयुले मेहदी से इस कौम को बेदार करने की कोशिश की। अल्लामा इकबाल ने मुसलमानों को आमदे मेहदी और ज़हूरे मेहदी की निशानियों का शायरी में इज़हार किया। यही वजह है कि मेहदी अल्मुंतज़िर सैयदना गौहरशाही ने किताब दीने इलाही में चांद, सूरज और हज़अस्वद की तसावीर के साथ अल्लामा इकबाल के उन मुतलिलका निशानियों के अशआर के हवाले दिए। सबसे बढ़कर मेहदी अल्मुंतज़िर सैयदना रियाज़ अहमद गौहरशाही ने भी शायरी को इज़ज़त बखशी। माशूकेमन सैयदना गौहर शाही फरमाते हैं कि जब हम लाल बाग़ में मसरूफे इश्क थे तब ही असदुल्लाह खान ग़ालिब और हज़रत इकबाल सरकार गौहर शाही से फैज़ हासिल करने के लिए हाज़िर हुए और फैज़ पाकर पेक़रार अर्वाह को क़रार नसीब हुआ। ग़ालिब और इकबाल को अपनी शायरी का मुद्दुआ और गौहरे मतलूब मिल गया।

मुहम्मद यूनुस अल्गौहर के नन्हे कल्ब में भी हुस्ने गौहर शाही की किरन तुलूअ़ हुई और उसने अपने इन लतीफ़ जज़बात का ज़रिया भी शायरी को ही बनाया। महसूस होता है कि यूनुस की शायरी में माशूकेमन गौहर शाही के इश्क के जज़बात ही नहीं बल्कि सैयदना गौहर शाही की जानिब से इल्का किए गए इसरार भी जलवागर हैं। मेरा ईमान है कि मुहम्मद यूनुस अल्गौहर के हिदायत याफता होने और उसकी शायरी अमर होने के लिए यही काफ़ी है कि मेहदी अल्मुंतज़िर सैयदना गौहर शाही ने यूनुस अल्गौहर की ग़ज़ल के एक शेर को दीने इलाही में शामिल कर दिया। दीने इलाही में शामिल शेर दर्ज़ज़ेल है।

**चांद सूरज क्या गवाही देंगे तेरी ऐ गौहर
है सबूतेहक तेरा इस दिल में आ जाने का नाम**

इस शेर को दीने इलाही में शामिल करके सैयदना गौहर शाही ने तसदीक फरमा दी कि यूनुस के कल्ब में सरकार गौहर शाही का जलवा शमाए इश्क रौशन किए हुए हैं। बहुत से लोग यूनुस को काफिर, मुल्हिद और गुस्ताख़ कहते हैं लेकिन हम समझते हैं कि सरकार गौहर शाही ने यूनुस अल्गौहर के मुहिब्बे गौहर शाही होने की तसदीक फरमा दी। लीजिए इस शायरी से लुत्फ़ अन्दोज़ हों और देखें कि हमारे दअ़वा में कितनी सच्चाई है।

अमजद गौहर (अरब ईमारत)

मेहदी फाउंडेशन इंटरनेशनल

मालिकुल मुल्क रियाज़ अहमद गौहरशाही

इस्म गौहर और इस्म रियाज़ की करिशमासाज़ी

इस काइनात की अफज़लतरीन नेअमत इस्म “गौहर” और इस्म “रियाज़” है। यही अस्माए मुकद्दस मुहब्बतोइश्क का अज़ीम सरमाया, ज़रीया और बारयाबीए मंज़िल हैं। इस्म गौहर और इस्म रियाज़ की तकरार से मुहब्बतोइश्क की लहरें उठती हैं। जो कल्बोरुह की गिज़ा और फिज़ा फ़राहम करती हैं। इन अस्माए मुकद्दस के ज़िक्र से जो फिज़ा और समौं बँधता है उसमें कल्बोरुह सॉस लेते हैं। इस लिये ज़रुरी है कि इन मुकद्दस अस्मा का कसरत से ज़िक्रोतकरार की जाये।

इस्म “गौहर” और इस्म “रियाज़” का ज़िक्र अफज़ल तरीन इबादत है! हर किस्म की इबादत इन मुकद्दस अस्मा के बगैर अधूरी और नामुमकिन है। मुहब्बान गौहरशाही पर लाज़िम है कि अज़कार अस्माए मुर्शिदी को रोज़आना ज़ौकोशौक के साथ करें। सुबह, शाम और रात को सोते वक्त इन अस्मा के अज़कार को वज़ीफ़ा बनायें।

तसावीर गौहरशाही

अस्माए मुकद्दस की कस्तेज़िक के साथ-साथ तसावीर माशूक सैयदना गौहरशाही को बज़रिया मश्क अपनी नज़रों में ज़ज्ब करें। सरकार की तसावीर में सरकार के जुस्साहाय मुबारक मौजूद हैं। यह तसावीर मुर्शिद का काम करती हैं।

अशग़ाल-ए-इश्क़

- १- तसावीर गौहरशाही को निगाहों में ज़ज्ब करें।
- २- अस्माए मुकद्दस का कसरत से ज़िक्र करें।

ज़िक्र..... इख़तेताम ज़िक्र

या गौहर.....	या गौहरशाही मरहबा
या रियाज़.....	या गौहरशाही मरहबा
या गौहर या मेहदी.....	या गौहरशाही मरहबा
ला इलाह इल्लल्लाह मेहदी ख़लीफ़तुल्लाह.....	या गौहरशाही मरहबा

ज़िक्र से फ़रागत के बाद खड़े होकर पढ़ें:

“गौहर गौहर पुकारूँ मैं मौला..... मुझसे गौहर को राज़ी तू कर दे”

फ़िहरिस्त

- | | |
|-------------------------------------|---|
| 1. गौहर गौहर पुकारूं | 42. नज्मे हुदा |
| 2. मौत रक्सॉ | 43. खामूश हैं लब |
| 3. सुन लो मेरी सदा | 44. वफ़ा शिअ़री |
| 4. तुम ही से हरम | 45. मुख़बरे रियाज़ |
| 5. हर क़तराए ख़ूं | 46. रियाज़े मस्तूर |
| 6. जलवाए रियाज़ | 47. सुख़न आलूद |
| 7. कृपा करो | 48. मिस्ले गौहर है भला कोई
.....निगारे ॲसू |
| 8. रियाज़े मन | |
| 9. सफ़र रियाजुल जन्ना दा | 49. चलिये यूनुस |
| 10. गौहरशाही प्यारिया | 50. इश्के रियाज़ |
| 11. माला जपो गोहर दी | 51. मरहलाए इश्क |
| 12. सिजदों की सौग़ात | 52. ॲखियों का झरोंका.... रहवरी मेरी |
| 13. इन्न मञ्जुम | 53. गोशाए तनहाई |
| 14. तेरी पोशीदगी | 54. ख़ूए शाही |
| 15. शरहए सदर | 55. हाए अफ़सोस..... नसीहत |
| 16. आज़माइश | 56. नख्ले गौहर |
| 17. यकीं मुहकम | 57. रियाज़ी फ़ितरत |
| 18. शज्ज़ए ग़ायेब | 58. मुनाजात |
| 19. तूर | 59. गौहरदारी वफ़ादारी |
| 20. पर्दाए मस्लेहत.....लुत्फ़ए गौहर | 60. खुदादारी बेज़ारी |
| 21. गौहर से दिलबरी | 61. मजमूअए ख़्याल |
| 22. पासे अश्क | 62. जुल्फे गौहर |
| 23. नामूसे गौहर | 63. दिलबर याद आये हैं |
| 24. वस्वसए नफ़्स | 64. तसल्सुले रियाज़ |
| 25. शहसवारे मुहब्बत | 65. हब्ले गौहर |
| 26. बसाते ज़ीस्त | 66. गोहर गौहर करे दुनिया |
| 27. अ़ज्मते जानों | 67. नशेमन |
| 28. याद क्यों सताई हूं | 68. तेरे जमाल से |
| 29. नज़र | 69. गौहरियत |
| 30. जश्ने गौहर | 70. तमसील..... सूए अदम |
| 31. प्यार की सौग़ात | 71. मुश्के दहन |
| 32. गौहर की नज़रों में | 72. विजय सत् गौहर |
| 33. रुहे गुमनाम | 73. अंदाजे जुनूं..... रुखे आइना |
| 34. रम्ज़ शनासाई | 74. नज़रे गौहर |
| 35. जिन्से आदम | 75. यूनुस |
| 36. जुस्तजूए यार | 76. रियाज़ी |
| 37. बयाज़े रियाज़ | 77. अकें गौहर |
| 38. इक़तिदाए रियाज़ | 78. रक्से इश्क |
| 39. फ़ल्सफ़ए इश्क | 79. बुते ज़िंदौ |
| 40. तेरा भेद न पाये कोई | 80. अलिफ लाम रा |
| 41. तनहा | 81. अफ़अ़ाल निहौं |

गौहर गौहर पुकारूँ मैं मौला

गौहर गौहर	गौहर	या गौहर गौहर
गौहर गौहर पुकारूँ मैं मौला छीन ले ऐसी नेअमत खुदारा तू ही कह दे क्या तेरा नहीं मैं क्या आस पर तेरी जिंदा नहीं मैं	मुझसे गौहर को राज़ी तू कर दे जो मुझे दूर गौहर से कर दे क्या गौहर तुझ पे शैदा नहीं मैं क्या गौहर तेरा बन्दा नहीं मैं	
गौहर गौहर	गौहर	या गौहर गौहर
नाम तेरा ही निकला जुबॉ से तूने चाहा तो तेरे हुए हम है मुहब्बत इन औंखों का बहना चोट खाकर किसी से न कहना	वास्ते तेरे पैदा हुए हम चुपक-चुपके हर एक जुल्म सहना जो भी देकर वफादार रहना	
गौहर गौहर	गौहर	या गौहर गौहर
जुल्म ज़ालिम की ठहरी विरासत हुब्बे गौहर मिले ऐसी किस्मत एहतेराजे वफा है ये नफ़रत इश्के गौहर, गौहर की है सितवत	मेरे दिल की दुआ है मुहब्बत गौहर वालों के दिल की है दौलत मुब्लिला-ए-जफ़ा है ये फ़ितरत क़ल्बे माशूक की न्यारी नुसरत	
गौहर गौहर	गौहर	या गौहर गौहर
ऐसी शरीअत से क्या फैज़ होगा वह तरीक़त कहॉ है तरीक़त है हकीक़त वही बस हकीक़त मरफ़त है तेरी मुस्कुराहट	जिसमें महके ना खुशबू-ए-गौहर जिसमें शामिल नहीं रंगे गौहर जिसमें झलके तेरा अ़क्स गौहर रुतबा क्या है बजु़ज़ नज़रे गौहर	
गौहर गौहर	गौहर	या गौहर गौहर
यूनुस-ए-सोख़ता का है नारा तेरे अफ़कार से दिल हुआ न्यारा	दिल है तेरी मुहब्बत में हारा तेरी उल्फ़त का बहता हुआ धारा	
गौहर गौहर	गौहर	या गौहर गौहर

मौत रक्सों

या रियाजे गौहर, या गौहर, या गौहर
लुत्फे ज़िकरे गौहर, या गौहर या गौहर
तेगु गर्दन पे हो! जो हो दस्ते अजल!
दिल कहे या गौहर! लब कहे या गौहर!
मौत रक्सों हो! और हो धमक या गौहर!
खँड़ की हर बँद बोले गौहर या गौहर!
इश्के गौहर है दिल में समाया हुआ!
रोके भी रुक सकेगा न ज़िकरे गौहर!
ऐ गौहर! जल्द हो जल्द हो यह सर्मों!
जो हो नज़रे गौहर बा रज़ाए गौहर!
तूई सुल्ताने मन! तूई मेहमाने मन!
तूई किबलाए मन! तूई काबाए मन!
तूही वजहे फज़ल, तूही जाने ग़ज़ल!
तू सरापा फज़ल, तू सरापा ग़ज़ल!
जानो दिल तुझपे कुर्बान-कुर्बान है!
मेरे दिल का बस एक तू ही अरमान है!
मेरा ईमों भी तू, मेरा कुरओं भी तू!
मेरा किबला भी तू, मेरा काबा भी तू!
जबसे देखा है तुझको तो बस तू ही तू!
दिल में तू, ऑख में और जिगर में भी तू!
क्या कहूँ दोस्तों! किस कदर खुश हूँ मैं!
लिख रहा हूँ ग़ज़ल सामने हैं गौहर!
मुस्कुराना तेरा क्या ग़ज़ब है गौहर!

सुन रहा था मैं कल गुफतगूएमलक!
कह रहे थे है कोई करीबे फलक!
देखना चाहते थे मेरी एक झलक!
देखने आये मुझको मेरे घर तलक!
देखा मुझको तो था ज़िकरे गौहर में गुम!
तब तो कुदसी भी बोले गौहर या गौहर!
सामने हों गौहर और आये अजल!
दीद होती रहे दम निकलता रहे!
सिर पे दस्ते गौहर दिल में यादे गौहर!
तेरे कदमों पे हो ख़ातमाए गौहर!
यूनुसे सोख़ता क्यूँ ना खुशबूत हो!
जिसको मनजूर कर ले वो ज़ाते गौहर!

लंदन, इंगलैंड

सुन लो मेरी सदा

गौहर शाही पिया! सुन लो मेरी सदा.....होके तेरा रहूँ ना हूँ तुझसे जुदा
मेरा रस्ता है तू मेरी मंज़िल भी तू.....तुझसे निस्बत रहे मेरी, गौहर सदा
जान निकले मेरी तेरे दर पे गौहर!.....दम निकलता रहे, और हो ये निदा
गौहर शाही पिया! सुन लो मेरी सदा.....होके तेरा रहूँ ना हूँ तुझसे जुदा
हिर्सए उकबा नहीं! शौके हूरों नहीं.....साथ तेरा और तेरी नज़र हो अता
अर्ज कैसे करूँ ख़्वाहिशे दिल गौहर?.....तू ही ख़्वाहिश मेरी, तू मेरा मुद्दुआ
मैं तो खटका बहुत, मैं तो भटका बहुत!.....तू ही थामे रहा, तू है नूस्ल हुदा
सारे जग के लिये तेरा दर है खुला!.....तुझको तकना लिका, तुझमें खोना फिना
ना ही रुहानियत, ना कोई मरतबा!.....मुझको दरकार है बस गौहर की रज़ा
ना ही काबा की ज़ियारत रवा है मुझे.....ना मदीना को जाने की हाजत मुझे
तेरी नज़रों से पीकर हुआ मस्त मैं.....जाम तेरा मिले और तेरा मैकदा!

हज़रत रियाज़ अहमद गौहरशाही की ज़ाती शख़सियत के चंद पहलू!

हज़रते मेहदी एक मरतबा है तेरा.....यूँ तो फ़क़रो विलायत भी सेहरा तेरा
तू खुदागर नहीं! तू जुदा भी नहीं!.....पर खुदा कह के माना तो माना ही क्या?
तेरे सारे मरातब हैं बरहक गौहर.....तेरे कदमों में सारी खुदाई गौहर
पर मुझे ग़र्ज़ है इन मरातब से क्या?.....तुझपे शैदा हूँ मैं और तुझी पर फ़िदा!
रोज़े महशर में गर! पूछ बैठे खुदा!.....क्या अकीदाओ मसलक है यूनुस तेरा?
मैं कहूँगा कि तू ही खुदा है मगर!.....गौहर शाही से बढ़कर नहीं बाखुदा!

तुम्हीं से हरम है कायेम

तुम्हीं से हरम है कायेम तुम्हीं से बुत ख़ाने
ये और बात है दुनिया ना तुम को पहचाने
किसी के मन में समाये हो देवता की तरह
और दिलो जान से कोई तुम्हें खुदा जाने
गौहर परस्तों का कोई मज़हब नहीं होता
जिसको मिल जायें गौहर वो मज़हब को क्या जानें
तुमने चाहा कि रहो खुद से भी पोशीदा मगर
चौंदो सूरज ने सुनाये तुम्हारे अफ़साने
शेख़े काबा ने तो चाहा कि ना हो ज़िक्र तेरा
है हज़र अस्वद में क्यों सूरत तेरी खुदा जाने
इन्हीं में गुम है नबूवत, अल्घीयत ब खुदा
अबस है गर ये कहें हम हैं इनको पहचाने
समझिये क्या इन्हें, क्या जानियेगा क्या हैं गौहर
गौहर नुमा है खुदा हम तो बस हैं यह जाने
सारे आलम को दिया दर्से आशिकी तुमने
क्यों ना चाहे तुम्हें दुनिया? ना तुमको क्यों माने
इश्क़ फिरत है तेरी, इश्क़ जुबॉ, इश्क़ अदा
इश्क़ तालीम तेरी! इश्क़ तेरे पैमाने
बे नियाज़ी पे तुम्हें नाज़ हमें फ़ख़ भी है
पर मेरी जान कहों जायें तेरे दीवाने
गौहर के रंग में रंग जाये जब कोई यूनुस
गौहर की पूजा करे वो खुदा को क्या जाने

हर कृतरा-ए-खूँ

हर कृतरा-ए-खूँ तेरी मुहब्बत में बहेगा
ये सर तो फ़क्त तेरी इबादत में झुकेगा
जो बन्दा-ए-गौहर है वही बन्दा-ए-हक है
यह राज़ सरे आम क़्यामत में खुलेगा
जिस शख्स को हासिल है तेरी ज़ात से उल्फ़त
वह शख्स ही बस तेरी मअ़ियत में रहेगा
वारे हैं जिसने दोनों जहाँ तेरी वफ़ा में
वह खुश नसीब तेरी निगाहों में रहीगा
कुछ दीन के शैदाई तो कुछ चन्दा के परस्तार
ख़लिस है वह जो तेरी मुहब्बत में मरेगा
तूफ़ाने यकायक से बिखर जायेगा हर शख्स
बाक़ी जो बचा तेरी इनायत से बचेगा
गौहर शाही से जो पेवस्ता हुवा है यूनुस
रंगे गौहर उसे हर रंगे हक़ायेक में रचेगा

(मानचेस्टर.....इंगलैण्ड)

जल्वा-ए-रियाज़

जल्वा-ए-रियाज़ ने जब अन्जुमन आराई की तो देखना होगी शहंशाही गौहर शाही की आज जो मुल्ज़िमो मुजरिम उन्हें ठहराते हैं कल वही लोग पनाह लेंगे गौहर शाही की हज़ अस्वद से है गर बैर तो सूरज देखो हर जगह आ गई तस्वीर गौहर शाही की वह अज़्ल से भी क़दीम उनको कोई क्या जाने वह हकीकत में हकीकत हैं किबरियाई की लश्करे इश्क में तलवार है और खून भी है बस इजाज़त हो ज़रा मेरे गौहर शाही की जब तेरे नाम पे मरना है तो उलझन कैसी? तेरी उलफत ही है पूँजी तेरे शैदाई की यूँ तो मेहदी हैं वो, अवतार और मसीहा भी पर बड़ी बात है गौहर से शनासाई की खलबली क्यों है ज़ाकरी में खौफ किसका है जबकि महशर में हकूमत है गौहर शाही की कैसे समझाऊँ इन्हें अज़मते गौहर यूनुस? बात हक की ही नहीं बात है हक नुमाई की

कृपा करो महाराज रा गौहर

कृपा करो महाराज रा गौहर, कृपा करो सरकार
दर्शन दे दो मुझ भगती को चरण लगें सरकार
तुमरे दम से रौनक जग में, तुम ही से संसार
तुम ही सब के राम हो गौहर, तुम हो पालनहार!
मन मंदिर में तुमरी मूरत, तुम भगवन सरकार
तन भी तुमरा, मन भी तुमरा, तुमरा है घर बार
अरज सुनो महाराज रा गौहर, अरज सुनो एक बार
दो नैना को तुमरे दर्शन हरदम हैं दरकार!
ऐसी राह दिखाओ मुझको तुमसे मिलौं हर बार
तुम पर वारी तुमरा पुजारी, तुम मोरे राज कुमार
जन्म-जन्म से तुमरा हूँ गौहर, तुम केवल सरकार
भरम तुम्हीं हो, धरम तुम्हीं हो तुम कलकी अवतार!
मोरे नैनों सारी रैनों तरसे दीद को तोरे
पूर्णिमा के दर्शन दे दो, ओ! चंदन सरकार
यूनुस तरसे प्रीत को तोरी, रंग दो तन और मन
मन भी तुम हो धन भी तुम हो तुम प्रीतम का प्यार
कृपा करो महाराज रा गौहर,.....

रियाज़-ए-मन या रियाज़ जानौं

रियाज़-ए-मन या रियाज़ जानौं, दिल में आना रियाज़ का गुनचा-ए-दिल का खिलाना, मुसकुराना रियाज़ का तू अलाओ इश्क़ का और मैं हूँ परवाना तेरा जलना फ़ितरत में है मेरी और जलाना रियाज़ का मैं कहूँ तो मैं ही जानूँ, कौन मुझमें बोले है? बोलता मैं ही हूँ लेकिन, है फ़रमाना रियाज़ का क्यों टटोलूँ क़ल्ब को जब कि वह क़ालिब में भी हैं मेरा दिल तेरा ठिकाना और समाना रियाज़ का रियाज़ देखे रियाज़ जाने, रियाज़ की बतीयों कर्सें रियाज़ की नज़दीकियों में गुम दिवाना रियाज़ का रियाज़ हॉ एक राज़ है लेकिन खुला मुझ पर कि यूँ जिस्म के गुंचे से दिल में है उभरना रियाज़ का आलमे नासूत में जो भी ठिकाने हैं तेरे तेरे मेरे दिल हैं जिन में है ठिकाना रियाज़ का रियाज़ क़ालिब में बसे तो रियाज़ ही जाने ये हक़ दुनिया वालों को ना धूनुस, तुम बताना रियाज़ का

سافرِ ریاجوں جننا دا

(فرمان-ए-گوہر شاہی)

میں تے بھول کے وی نہیں بھلیوں، رکھ تے را ایڈر ہووے

اُنھیں سوہنے نہیں وایے نی، جے تے را گوچار ہووے
میں تے مار کے وی نہیں ماردا.....جے تے ری نجراں ہووے
دماں دماں نال جیکر کاروں، میں تے ریوں جوںکوں دا
تے رے نام تؤں وار دیوں، جینی میری ٹ عمر ہووے
جڈوں گوہر کھانوں.....خیچ پئی اے سینے خیچ
باڑوں گوہر ڈولن دے، کیوں ٹ عمر بسرا ہووے
کیوں ہیجر دی سوچی تے، مینڈوں چاڈ دیتا گوہر
بھن سوچ دیل میرے نہیں، جے چاہ خیچ کسرا ہووے
میں کملی اؤں خوچی اؤں، کیوں چاہ تے ری مانگوں
تؤں ریاجی کرم کر چڈ، بھاری مانگ مکار ہووے
توسی نےڈے ای وسادے ہو، اے ہو دیل میرا کئندے اے
اک فرما لا گوہر، تو دیل نہیں سبار ہووے
توسی ایسے ای لوککے او، مینڈوں دیل میرا کئندے اے
سوہننا مुखڈا ویخا دیلبار، ہجواروں دا سافر ہووے
تے را مुخڈا تکدا روانوں، اے میں وی چونا خیچ
کدی ریاجوں جننا دا، میرا وی سافر ہووے
تے نہیں تکنا ہیاتی اے، میرے دیل دی اے گوہر
تے را مुخڈا ہر وے، میرے پے شے نجراں ہووے
توسی شاہ رگ تؤں نےڈے ہو، کی دسیے ہالے دیل
اے ہو ای مانگنا دعاویوں میں، میرا دیل تے را گھر ہووے
جڈوں نام لیوں تےڈا، اک ہوک پائی ٹھڈی اے
ہر وے لے میرے گوہر، تے رے نال بسرا ہووے
میڈوں راجی رے گوہر، نیکی ارجاں میں کیتی اے
کدموں خیچ گوہر دے، کدی میرا وی سر ہووے
یونس دی دعاویوں دا، کوئی مول نہیں لوکوں
جڈوں گوہر کھوں دیل تؤں، ہر پاسے گوہر ہووے

(25 جون 2003.....لندن)

ਗੈਹਰ ਸ਼ਾਹੀ ਪਾਰਿਆ

ਸੁਨ ਗੈਹਰ ਸ਼ਾਹੀ ਪਾਰਿਆ, ਜਿਨਦ-ਜਾਨ ਤੇਰੇ ਤੌ ਵਾਰਿਆ
ਤੌ ਅਜ਼ਲੋਂ ਤੌ ਤਕਦੀਰ ਮੇਰੀ, ਏਥੇ ਆਕੇ ਤੈਨ੍ਹੂ ਪਾ ਲਿਆ
ਤੇਰੀ ਅਖਿਧਿਆਂ ਇਥਕ ਸਿਖਾਂਦਿਆਂ ਨੇ, ਮਸ਼ਟੀ ਦਾ ਜਾਮ ਪਿਲਾਂਦਿਆਂ ਨੇ
ਤਕ ਅੱਖ ਤੇਰੀ ਆਸ਼ਿਕ ਹੋਯਾ, ਨਾਲ ਰੁਹ ਨ੍ਹੂ ਵੀ ਚਮਕਾ ਲਿਆ
ਅੱਖਿਧਿਆਂ ਦੇ ਬ੍ਰਾਏ ਬੈ ਕੇ ਮੈਂ, ਪੀਦਾ ਰਵੋਂ ਜਾਮ-ਏ-ਗੈਹਰ
ਜੇ ਅੱਖਿਧਿਆਂ ਨੀਰ ਬਹਾਂਦਿਆਂ ਨੇ, ਨਾਲ ਨੀਰੋਂ ਨ੍ਹੂ ਵੀ ਰੁਲਾ ਲਿਆ
ਬੁਲਿਆਂ ਚੁੱ ਮੁਸ਼ਕ ਦਾਖਿਲ ਕੀਤਾ, ਹਸਤੀ ਨ੍ਹੂ ਮੁਸ਼ਕ ਬਨਾ ਦਿੱਤਾ
ਮੈਨ੍ਹੂ ਲਕ ਪਿਲਾ ਕੇ ਗੈਹਰ ਨੇ, ਇਥਕੇ ਦਾ ਤਿਫ਼ਲ ਜਮਾ ਦਿਆ
ਮੈਂ ਗੈਹਰ ਗੈਹਰ ਕਰਦੀਆਂ, ਗੈਹਰ ਦੀ ਬੂਟੀ ਲਾਵੋਂਗਾ
ਗੈਹਰ ਦੀ ਕਰਮ ਨਵਾਜ਼ੀ ਏ, ਮੈਨ੍ਹੂ ਅਪਨੇ ਪੀਛੇ ਲਾ ਲਿਆ
ਮੈਨ੍ਹੂ ਬੁਟਿਆਂ ਦਿੱਤਿਆਂ ਗੈਹਰ ਨੇ, ਹਰ ਪਾਸੇ ਵੱਡਾ ਜਾਵੋਂਗਾ
ਜੇਨ੍ਹੂ ਜਾਤੇ ਗੈਹਰ ਨੇ ਚਾਹ ਲਿਆ, ਓਥੇ ਇਸ਼ਮ ਨੇ ਡੇਰਾ ਲਾ ਲਿਆ
ਈਮਾਨ ਧਰੋਈ ਪੈ ਗਿਆ, ਦਿਲ ਗੈਹਰ ਸ਼ਾਹੀ ਲੈ ਗਿਆ
ਈਮਾਨ ਨ੍ਹੂ ਮਗਲੁੰ ਲਾਕੇ ਮੈਂ, ਗੈਹਰ ਦਾ ਰੰਗ ਚਢਾ ਲਿਆ
ਚਨ, ਸੂਰਜ, ਹਜ਼ੇ ਅਸ਼ਵਦ ਵਿਚ, ਰੋਸ਼ਨ ਹੁੰਈ ਤਸਵੀਰ ਤੇਰੀ
ਮੇਰੇ ਦਿਲ ਨ੍ਹੂ ਵੀ ਚਮਕਾ ਦਿਧੋ, ਜੇ ਵੀਂ ਪਥਰੋਂ ਨ੍ਹੂ ਚਮਕਾ ਦਿਧੋ
ਜੇਡੇ ਗੁਰਜ਼ੀ ਸਨ ਓਂ ਦੌਡ਼ ਗਿਆ, ਅਪਨੇ ਰਥ ਤੌ ਮੁਹ ਮੋਡ਼ ਗਿਆ
ਲਡ਼ ਲਾ ਕੇ ਭੁਲ ਨਾ ਜਾ ਵੀਂ ਤੌ, ਮੈਂ ਦਿਲ ਤੇਰੇ ਤੌ ਹਾਰਿਆ
ਆਦਮ ਏਕ ਧੋਕਾ ਮੌਕਾ ਏ, ਮੁਕ ਜਾਨਾ ਏ ਤਕਦੀਰ ਏਦੀ
ਮੈਂ ਸ਼ੋਲਾ ਇਥਕ ਦੀ ਭਟਟੀ ਦਾ, ਏਥੇ ਆਕੇ ਭੇਸ ਵਟਾ ਲਿਆ
ਨਾਲ ਸੋਹਨੇ ਦਿਲਬਰ ਗੈਹਰ ਦੇ, ਲਡ਼ ਲਾਕੇ ਧੂਨੁਸ ਸੋ ਗਿਆ
ਹੁਨ ਸੁਤਿਆਂ ਫੇਰ ਮੈਂ ਜਾਗੋਂ ਗਾ, ਜਦੋ ਗੈਹਰ ਨੇ ਬੁਲਾ ਲਿਆ

(26 ਜੂਨ 2003.....ਲੰਦਨ)

ਮਾਲਾ ਜਪ੍ਪੇ ਗੈਹਰ ਦੀ

ਨਚ, ਨਚ ਕੇ ਰੋਲਾ ਪਾਵੋਂਗਾ.....ਗੈਹਰ ਨਾਲ ਅਖ ਲਡਾਵੋਂਗਾ
ਦੇ ਬੋਂਗ ਗੈਹਰ ਦੇ ਨਾਵੋਂ ਦੀ.....ਦੁਨਿਆ ਨੌ ਗੀਤ ਸੁਨਾਵੋਂਗਾ
ਜੋ ਰਲ ਮਿਲਿਆ ਵੋ ਪਾਰ ਲਗਾ.....ਜੋ ਭੁਲਿਆ ਮੈਂ ਭੁਲ ਜਾਵੋਂਗਾ
ਜਿਸ ਪ੍ਰੀਤ ਲਗਾਈ ਨਾਲ ਗੈਹਰ.....ਮੈਂ ਉਸ ਨਾਲ ਹਾਥ ਮਿਲਾਵੋਂਗਾ
ਉਸ ਦਿਲਬਰ ਦੀ ਤਾਰੀਫ ਕੇਵੀਂ.....ਕਰ ਸਕਦਾ ਏ ਕੋਈ ਵੀ ਬਸ਼ਾਰ
ਗੈਹਰ ਦਾ ਨੋ ਲੈ-ਲੈ ਕੇ ਮੈਂ.....ਨਾਵ ਅਪਨੀ ਪਾਰ ਲਗਾਵੋਂਗਾ
ਹਰ ਵੇਲਾ ਮੇਲਾ ਗੈਹਰ ਦਾ.....ਹਰ ਹਸਤੀ ਮਸ਼ਤੀ ਗੈਹਰ ਦੀ
ਤੁਸੀਂ ਮਾਲਾ ਜਪ੍ਪੇ ਗੈਹਰ ਦੀ.....ਮੈਂ ਨਾਲ ਤੁਸੋਂ ਰਲ ਜਾਵੋਂਗਾ
ਚਨ ਵੇਖ ਕੇ ਧਾਦ ਸਤਾਂਦੀ ਏ.....ਤੈਨੌ ਵੇਖ ਕੇ ਈਦ ਮਨਾਵੋਂਗਾ
ਰਬ ਰਿਯਾਜ਼ ਪ੍ਰੀਤ ਨੌ ਤੋਡ ਦੇ ਨਈ.....ਸਾਂਗ ਲਾਕੇ ਬੇਬਸ ਛੋਡ ਦੇ ਨਈ
ਜੋ ਹਰ ਮੌਲਾ ਦਾ ਮੌਲਾ ਏ.....ਮੈਂ ਉਸ ਨਾਲ ਪ੍ਰੀਤ ਲਗਾਵੋਂਗਾ
ਏਕ ਖੇਡ ਬਨਾਈ ਦੁਨਿਆ ਏ.....ਉਸ ਖੇਡ ਦੀ ਖੇਡ ਮੈਂ ਖੇਡੋਂਗਾ
ਉਸ ਖੇਡ ਚੁੱ ਲਭਿਆ ਧਾਰ ਮੈਨੌ.....ਹਰ ਬਾਜ਼ੀ ਖੇਡੀ ਜਾਵੋਂਗਾ
ਝੁਹ ਸਾਡੀ ਗੈਹਰ ਤੌ ਵਖ ਨਈ.....ਬਿਨ ਗੈਹਰ ਦਿਲ ਵਿਚ ਕਖ ਨਈ
ਅਖ ਤੌ ਦਿਲ ਢਾਰੇ ਆਕੇ ਮੈਂ.....ਗੈਹਰ ਮੁਖ ਵਿਚ ਲੁਕ ਜਾਵੋਂਗਾ
ਯੂਨੁਸ ਤੂ ਸਾਡਾ ਬਨਦਾ ਏ.....ਰਖ ਸੌਭ ਕੇ ਅਪਨੇ ਸਜਦਿਯੋਂ ਨੌ
ਤੇਰੇ ਸਜਦਿਯੋਂ ਦਾ ਏਕ ਦਿਨ ਸੁਨ ਰਖ.....ਇਥਕੇ ਦਾ ਹਾਰ ਬਨਾਵੋਂਗਾ

सजदों की सौग़ात

मेरे नगमात बस तेरे लिये हैं मेरा तुझसे तअल्लुक अब भी क्यों है?
मेरे दिन-रात बस तेरे लिये हैं यह इलज़ामात बस मेरे लिये है
तुझी को ढूँडे हैं तरसी निगाहें मुनाफिक रन्ज देकर दिल दुखाये
यह एहसासात बस तेरे लिये हैं अज़ल से यह खुराफ़ात बस एक मेरे लिये है
मैं तनहा हूँ ज़मी पे तू कहाँ है? गौहर ख़ातिर तेरी, मुझपर खुदा की लअनतें हों
मेरे लमहात बस तेरे लिये हैं अज़ल से यह नवाज़िशात बस एक मेरे लिये है
मेरी मुसकान में रंगीनियाँ हैं गौहर आँखों से ओझल है मगर दिखता है हरजा
मेरे ज़ज़बात बस तेरे लिये हैं यह नज़रों के तिलिस्मात बस एक मेरे लिये है
सुबह से शाम और फिर रात में तू खुदा वाले, खुदा ही से पनाह लैं
मेरे अवकात बस तेरे लिये हैं गौहर का दर्द और गुम की मदारात बस एक मेरे लिये है
जिस्म फर्शी तो दिल मेरा है अर्शी गौहर के हुस्न से रोशन हैं यूँ तो सैकड़ों दिल
यह मुआमिलात बस तेरे लिये हैं यह ग़ज़लों की करामात बस एक मेरे लिये है
तू दिल से उभरे तो बनती ग़ज़ल है गौहर के सामने गर की वफ़ा तो क्या वफ़ा की
यह ग़ज़लियात बस तेरे लिये हैं गौहर की खोज की सारी मुहिम्मात बता किसके लिये हैं
खुदा से बेख़बर हूँ और मुहम्मद अजनबी हैं खुदा से छेड़ ली है जंग गौहर ने
यह तसबीहात बस तेरे लिये हैं कि हो मालूम गौहर से तअल्लुकात बता किसके लिये हैं
तअल्लुक क्या मेरे सिजदों से रब को कर्सूं गुस्ताख़ से क्यों कर बहस मैं
मेरे सिजदों की ये सौग़ात बस तेरे लिये हैं यह सब हुज्जात बस तेरे लिये हैं
सुना है अर्थियों से रमज़े गौहर आम होगी ग़फूर अलवी कहें तरज़े तखातुब सख्त क्यों हैं
अब कुछ भी हो मेरे हालात बस तेरे लिये हैं यह लेहजे की रवायात बस एक तेरे लिये हैं
दिया दर्से मुहब्बत तुमने यूँ तो दो जहाँ को सब ही हैं मुजतरिब यूनुस कि गौहर को हुआ क्या
कुछ फरमूदात बस मेरे लिये हैं रियाज़े हस्ती की सारी रियाज़ात बस एक तेरे लिये हैं
खुदा की बिरादरी का राज़ खेला यह इक़दामात बस तेरे लिये हैं

इन्न मअ़कुम

इन्न मअ़कुम की सदा आती है.....कुछ तसल्ली सी हुई जाती है
उस तबस्सुम की बात क्या कीजिये.....रुह को जिंदगी मिल जाती है
साकिये रुह, गौहर की आखें हैं.....रुह मदहोश हुई जाती है
सेहरे गौहर में गिरफतार हुआ.....अब कहों अक्ल मुझे भाती है
काश तुम उनसे प्यार कर लेते.....उनकी आखों में कुल सबाती है
प्यार हो जाये तो मुश्किल क्या है.....प्यार की रम्ज़ गुर सिखाती है
प्यार दीवानगी सिखाता है.....प्यार से खूए यार आती है
नूर रौशन चिराग है लेकिन.....प्यार से बूए यार आती है
उन की आखें हैं प्यार का किल्ला.....किल्ला रुख़ कल्बो नज़र जाती है
यह जहों गौहरी अज़ान बना.....नारा-ए-रियाज़ से तकबीर कही जाती है
प्यार गौहर है, गौहरी रंग में.....हर हिना प्यार की रंग लाती है
अब मेरा दिल यहों नहीं लगता.....इश्के गौहर की लौ सताती है
हिम्मत आमेज़ हैं लमहाते अलम.....हर खुशी फीकी पड़ती जाती है
किस जहों से यह नामे आते हैं.....नामावर की जुबों बताती है
इश्क अपना खुदी में पिनहों है.....कैफियत इश्क की जताती है
मुंतज़िर किस खुशी का रहता हूँ.....ओंख क्यों इस कदर रुलाती है
मैंने समझा था इश्क राज़ रहे.....इश्क की मुश्क फैली जाती है
खिल्वते बज़े जुल्फे यार सबा.....सारे आलम पे वो लहराती है
सीनाए अजल पे करता हूँ दास्तान रक़म.....इश्क से मौत सहमी जाती है
फितरते इश्क अब्वलीं हुआ जब रिश्ताए रुह.....फिर कहों दूसरी निस्बत असर दिखाती है
मैं रियाज़ी हूँ मेरी सोंस है सबा-ए-रियाज़.....अब सबाए जहों से रुह कसमसाती है
दीन-ए-यूनुस गौहर की हस्ती है.....बंदगी की अदा बताती है

तेरी पोशीदगी

ना मैं तुझसे जुदा, ना तू मुझसे जुदा
मैं हूँ तुझपे फ़िदा, तू मेरा है खुदा
मुझको देखे कोई तो मेरी ही सुने
तुझको जाने कोई तो तुझे दे सदा
चश्म बेनूर है उसपे दिल है सियाह
जिसको देखे नज़र वो नज़ारे जुदा
ख़ह रब की हकीकत से मामूर है
नफ़्स की गैरियत में छुपा है खुदा
अपनी जल्वत में अपनी खुदी को परख
जल्वा-ए-जानों किसने कहा है जुदा
अपनी हस्ती को क्या ढूँड पाऊँगा मैं
तुझमें खोकर भला मुझमें क्या है बचा
आ भी जाओ गौहर सूनी है ये फ़िज़ा
ज़िंदगी बिन तेरे हो ना जाये क़ज़ा
कान तरसे हैं तेरी ही आवाज़ को
आहटों पे लगे तेरी आये सदा
क्या सज़ा है कोई तेरी पोशीदगी
या है इल्ज़ाम ए इश्क़ो सज़ा ए वफ़ा
आज संदेश दे टूटे दिल को गौहर
मुंतज़िर हैं सभी तेरी आये सबा
अपने जलवों की शिद्दत बढ़ा दीजिये
ये ही मतलूब है और यही है निदा
अब शबो रोज़ यूनुस की है इल्तिजा
वस्ल ए दायेम की गूँजे है दिल से सदा

(18 मई 2003.....लंदन)

शरह-ए-सदर

नाम ए गौहर से बढ़ कर नहीं कुछ.....नाम ए गौहर है कुंजी कदर की पा गया राज़ ए मख़फी वही शख़स.....जिसने गौहर से शरह ए सदर की मंज़िलों का निश्चौ है वही दिल.....ज़ीस्त जिसने गौहर माझ़ बसर की भटका फिरता है दर-दर पे वो ही.....जिसने ज़िकरे गौहर में कसर की उंगलियों दौत में देते फिरते.....पूछे हैं बात है ये किधर की जिस जगह है गौहर का ठिकाना.....बात करता हूँ मैं भी उधर की तुऱ्हम ए इश्क की है ख़ैरात वों बस.....सदका ए जान जिसने नख़र की इश्क दुनिया में ही हश्च कर दे.....फ़िक्र क्यों मैं करूँ फिर हशर की गुस्ला ओ असनान पाकी नहीं है.....बात करता हूँ मैं चश्म ए तर की पाक फ़ितरत अता हो गौहर से.....है विरासत फ़क्त तिफ़्लेनर की यार दुनिया में बसरे खुदा ह.....बुल्हे शाह की भी यारी दहर की मैं बताता हूँ इसरारे मख़फी.....मेरी गोयाई है उस ख़बर की नामाबर जामाए नामाबर है.....रीत डाली है यह नामाबर की नामाबर जानता है नज़ाकत.....ऐसे दीवाने आशुफ़तासर की औंख रोये तो औंसू बचा लो.....दीद मॉगो तो तलकीं सबर की दर्द से आहें निकलीं तो बोले.....दर्द की कैसी तुमने कदर की सारे उश्शाक मुर्शिद में गुम हैं.....हर शजर को पड़ी है समर की खुसर अपने पिया की लगन में.....बात यूनुस करे है गौहर की

8 जुलाई 2003.....लंदन, इंग्लैंड

आज़माइश

आज़माइश का यही वक्त है आगाह रहो
जों लुटाने का यही वक्त है आगाह रहो
कौन कहता है मसलेहत से काम लेना है?
इज़हारे हक का यही वक्त है आगाह रहो
बातिल की कुव्वतें हुईं सब बरसरे पैकार
साथ देने का यही वक्त है आगाह रहो
ज़हूरे मेहदी हो गया बसूरते गौहर
सदाए हक का यही वक्त है आगाह रहो
अब तो हर हाल में गौहर का साथ देना हे
वफ़ाए हक का यही वक्त है आगाह रहो
गौहर शाही के लिये जिस्मो जों लुटाना है
सिर कटाने का यही वक्त है आगाह रहो
मासिवा हुब्बे गौहर सारे अकायेद बरतरफ़
साथे गौर का यही वक्त है आगाह रहो
दिल के हर गोशो में गौहर का नक्श है यूनुस
रंग जमाने का यही वक्त है आगाह रहो

यकीं मोहकम रहे गौहर पे

यकीं मोहकम रहे गौहर पे तो हर दौर अच्छा है
जिसे गौहर से उल्फत हो, वह गुनहगार सच्चा है
नफस बेदार है और रुह महवे इस्तेराहत है
ये जहाँ ख़वाब है इस ख़वाब का हर रंग कच्चा है
गौहर का नक्शेपा, सिजदागाह है अहले गौहर है
गौहरी नक्श है किबला तो हर इक लम्हा सिजदा है
मोहब्बत कल्ब से, और रुह से आशिक बनूं तेरा
बन्दगी नफस से और दिल हरीमे रियाज़ हव़क़ा है
किसे हाजत रहे सिजदों की जब मस्जूद अन्दर है
सिज्दाए दिल ह़ज़ूरी में रहे तो सबसे अच्छा है
वफादारी, मोहब्बत, इश्क़ सब उनकी अतायें हैं
न हो हासिल अगर कुछ भी तो गौहर नाम सच्चा है
इबादत पारसाई जग हसाई बन गई यूनुस
बख़ील आबिद से सहबारी भला गौहर का कुत्ता है

शजरे ग्रायेब

ज़िकरे गौहर अताए गौहर है
ज़िकरे गौहर पे आँख भर आये
ज़िकरे गौहर वजूदे इस्मी है
शोलए इस्म से शरर आये
क्यों ख़ाफ़ा हो? वफ़ाए गौहर पे
हुब्बे गौहर में क्यों कसर आये?
आशिकी, इश्क की अमानत है
इश्क में चाहे तन से सर जाये
अज़ल से पेश्तर है इश्क मेरा
कुन फ़्यकूँ से क्यों बिखर जाये
आशिकी मशगुलए गौहर है
मशगुले गौहर में जाँ सँवर जाये
गौहर शाही लिल्लाही दीन क्यों है?
फातहे इश्क से नुसर आये
इश्क क्यों आये जब न माशूक हो
मअ़ जब इश्क है तो फिर आये
इश्क को देखना ही बीनाई
दीदो बीना इश्क पर आये
क्या जहाने ख़राब की वक़अत?
इश्क क्यों इस जहाँ में फिर आये?
अपनी बूटी यहाँ नहीं यूनुस
शजरे ग्रायेब में क्यों समर आये

तूर

अपना पराया कौन है मालूम हो गया
गौहर का साया कौन है मालूम हो गया
रुहानियत के नूर से पहुंचा तो बहरे नूर तक
गौहर का रस्ता और है मालूम हो गया
जिस दिल में नूर है वो मिस्ले काबा तो हुआ
गौहर का तूर और है मालूम हो गया
दीदारे रियाज़ मागे है मूसा के रूप में
क्यों लन्तरानी कह दिया मालूम हो गया
आँखों से दूर क्या हुआ दिल में समा गया
गैबत करम की भीक है मालूम हो गया
जिस आँख से ओझल हुआ वो हो गई बेनूर
दिल में समाया रियाज़ तो मालूम हो गया
ख़वाजा खुदा का रूप हैं, दाता भी हैं मगर
हम भी किसी का रूप हैं मालूम हो गया
चन्दा में, सितारों में, मेरे दिल में हैं गौहर
कहता है कौन रियाज़ अब मअदूम हो गया
गौहर तुम्हारे नाम के शैदा खत्म हुए
गौहर पराया हो गया मालूम हो गया
ऐ मालिके जहाँ क्यों ठिकाना बदल हुए
कहसरे रियाज़ है कहाँ मालूम हो गया
अब नाज़ उठायें तेरे अन्दाज़ क्या होंगे
अब नाज़े रियाज़ है कहाँ मालूम हो गया
जो सायाए गौहर से हुआ दूर तो सुन लो
वह रियाज़ के जलवों से भी महरूम हो गया

जिस कल्ब में गूंजे है तेरे नाम की तकबीर
उस कल्ब की परवाज़ का मालूम हो गया
क्यों अश्क बहारूँ मैं तेरे धोके पे गौहर
तू मक्र के परदे में है मालूम हो गया
यूं तो खुदा भी मकर का बेताज शहंशाह
तू मिस्ले लामिस्ल है ये मालूम हो गया
क्योंकर अःदम की तल्ख़ हवायें तुझे छू लें
तू हर अःदम की असल है मालूम हो गया
तू है तो अःदम है, तेरा होना ही अःदम है
तू छाया तो अब हर अःदम मअदूम हो गया
तू आलमे असबाब में आया किसी में यूं
तू जाने हस्ती और वो खुद मअदूम हो गया
तू मज़हरे रियाज़ है तुझको फना नहीं
जो तुझसे हुआ दूर वो महरूम हो गया
ये लम्स तेरा है या मेरा है नहीं ख़बर
अब मैं कहाँ रहा हूं ये मालूम हो गया
क्यों देख पारूँ तुझको कि आँखें हुई मन्ज़र
आँखों का नूर तूर है मालूम हो गया
यूनुस ग़ज़ल का अन्तरा यूनुस पे ख़त्म कर
यूनुस पै कहाँ खोगया ? मअदूम हो गया

परदा ए मसलेहत

परदा ए मसलेहत से ज़ज्बात हुए नाकारा
मोज्ज़ाए इश्क के तिलिस्मात हुए नाकारा
छा गये अहले इलम, अहले अक़ल, अहले ख़िर्द
मिट गई सोज़ो जलन, इश्क हुआ आवारा
अब जुनूं खो सा गया, वारफतगी भी सर्द हुई
मस्लेहत आम हुई, इश्क हुआ नाकारा
इश्क ही इश्क पर कुर्बान होके शाद हुआ
इश्क की भेंट चढ़े, क़ल्ब हुआ सहपारा
यूनुस दास्ताने अलम अब किसी से क्या कहिये!
इश्क शाहज़ोर भी लगता है आज बेचारा!

१५ अक्तूबर १६६६, दौराने परवाज़ लंदन ता अमेरिका

लुत्फे गौहर

दिले बेज़ार को तलब ही नहीं
इस जहाने ख़राब की रौनक
हाँ मगर लुत्फे यार की ख़ातिर
इशरते क़त्ल की ख़्वाहिश है हक़
क्या उन्हें भी ख़बर है यूनुस कि
हिज्र के ख़ौफ से दिल है फ़क़

अक्तूबर १६६६ वरजीनिया, अमेरिका

गौहर शाही से दिलबरी की है!

अपनी किस्मत से यावरी की है, जबसे गौहर से दिलबरी की है जानो दिल दोनों निषावर करके, हमने गौहर से दोस्ती की है गौहर शाही से करके अहदे वफा, सारे आलम से दुश्मनी ली है सर हथेली पे रख लिया हमने, क्यों कि गौहर से आशिकी की है सारी दुनिया के बादशाह हैं हम, क्यों कि गौहर की चाकरी की है तेरे जलवों की जौफ़िशानी ने, सारे आलम में रोशनी की है क्या कहूँ अज़्ल से तुम्हारा हूँ, अब नहीं तबसे दोस्ती की है खेमाज़न दिल में हो गये गौहर, फिर भी हर लहज़ा बेकली सी है यूं तो रहते हैं वो मेरे दिल में, फिर भी कुर्बत की तिश्नगी सी है ऐसे रहते हैं वो मेरे दिल में, जैसे चिलमन में इक शबीह सी है मौत आये रहे गौहर में मुझे, इक तमन्नाए दिल बनी सी है क्यों झुकाउं मैं सर को बहरे खुदा, अज़्ल से तेरी बंदगी की है जिस सिमत जाइयेगा, हैं गौहर, हर शबीह सूरते गौहर सयी है सैर हासिल नहीं है दीद तेरी, सब खुदाओं की बस नफ़ी की है जामो साग़र की अब क्या पूछते हो? उनकी आँखों की हमने मय पी है जब से देखा है उनको यूनुस ने, तबसे आँखों में इक नमी सी है

२७ दिसंबर १९६६ फ्रैकफर्ट, जर्मनी

पासे अश्क

है बक़ा ज़ाते गौहर में यूं फना होने का नाम
जैसे जुल्मत छटके हर सू रौशनी होने का नाम
इक ख़ज़ीनाए ख़ज़न है तेरी हस्ती ऐ गौहर!
और लक़ब मेहदी है तेरे आम हो जाने का नाम
चाँद, सूरज क्या गवाही देंगे तेरी ऐ गौहर!
है सबूते हक तेरा इस दिल में आ जाने का नाम
कौन जीने की तमन्नायें करे बाद अज़ गौहर!
तुझपे मरना है गौहर इक तरह जी जाने का नाम
सिज्दाए इश्को मुहब्बत क्या करूँ मैं ऐ गौहर
तुझमें खो जाना है हर एक सिज्दा हो जाने का नाम
मौत क्या मारेगी मुझको! मौत क्योंकर मौत हो!
इक अदाए दिलबराँ है जान से जाने का नाम
तू परे है उस खुदा से जिसको पूजे हर बशर
तुझको पा जाना है सिरे गैब को पाने का नाम
हालते ईमानो हुब्बो इश्क में क्या फर्क है?
फर्क है बस सिरे गौहर का सिरा पाने का नाम!
क्या ख़बर यूनुस उन्हें किस दरजा पासे अश्क है?
आँख का है मूँदना, आँसू के बह जाने का नाम

८ जनवरा २००० मेरी लैन्ड, अमेरिका

नामूसे गौहर शाही

इस दौरे इब्तिला में वफा कौन करेगा
गौहर के लिये जामे फ़ना कौन पियेगा
इन्साफ़ है नापैद और हाकिम हुए ज़ालिम
इस दौर में ललकारे गौहर कौन बनेगा
गौहर की शबीहात पे हंसता है ज़माना
अब तेरे शआएर की सना कौन करेगा
नामूसे गौहर शाही को लाहक हुआ खतरा
गौहर की आबरू का दिफा कौन करेगा
मनज़ूर किसे होगा तेरे नाम पे मरना
अब हक़ की सदाक़त की सदा कौन बनेगा
बेहिस हुए ज़ाकिर बअन्दाज़े बूजहल
किरदार नुमा शेरे खुदा कौन बनेगा
उलझन की कैफियत है अब अरबाबे वफा में
अब ज़ज्बाए शहादत की दुआ कौन करेगा
हक़जोईयो गोयाई भी शायद हुई मफ़कूद
इस दौर में गौहर की जुबाँ कौन बनेगा
गौहर हैं तमाशाई बअफ़अ़ाल करम खुद
हैं मुन्तज़िर कि जान फ़िदा कौन करेगा
कुरबानियो ईसार का वक़्त आन ही पहुंचा
अब देखिये कि जंगे बक़ा कौन लड़ेगा
अहले दिल छुप गये और आशिर्कीं भी सर्द पड़े
अब तेरी शुजाअत की अदा कौन बनेगा
यूनुस जिन्हें हासिल है अज़ल से ही रफ़ाक़त
उन जैसा वफ़दार भला कौन बनेगा

२ मई २०००, कराची

वसवसाए नफ्स

कसमे वादे मत दोहराओ, करो बहाना जान छुड़ाओ
जिकरो फिकर सब ठीक था लेकिन, दरसे शहादत मत समझाओ
मैं क्यों अपना तन मन वारूँ? मुझपर हक तुम ना जतलाओ
मेरे बीवी और बच्चे हैं, मुझसे सहल कोई काम करवाओ
मुझसे कोई पैसा ना मांगो! मुझसे तकरीरें करवाओ
हक की बाबत कुछ ना पूछो, मुझसे तुम फितने उठवाओ
हक मानना ही काफी है, हक पे मरना मत समझाओ
मुझसे कोई तुम फन्ड ना मांगो, मुझको तबरस्क रोज़ खिलाओ
मुझसे तवक्को कुछ ना रख्खो, मेरे बिगड़े काम बनाओ
रात का पहरा मत दिलवाओ, मुझको दिन का काम बताओ
यूनुस भाई जिन्दीक हुए हैं उनका बन्दोबस्त करवाओ
गौहर उनकी बात ना मानो, उनको सूली पर लटकाओ
ये लोगों को क्यों गाली दें? तुम चाहो गाली सह जाओ
फेर लो इनसे नज़रे इनायत, इनको मुरदा ही ठहराओ
मेरी भी कुछ मजबूरी है, मुझको गौहर भूल ही जाओ
कौन मरे अब हक की खातिर, यूनु अब तुम ही बतलाओ

८ मई २०००, जमशेद रोड कराची

शहसवारे मुहब्बत

मुहब्बत के दावे वफा हो गये?
वह कर्ज़े मोहब्बत अदा हो गये?
बड़ा नाज़ था जिनको कुर्बानियों पर
वह सब सूरमा क्या हवा हो गये?
चलाई जो इब्लीस ने भेड़ चाल
शहसवारे मोहब्बत फना हो गये!
नहीं काम जिनको बजुज खुदनुमाई
वही दौरे हाज़िर में वाँ हो गये
गौहर के मकासिद से क्या वास्ता?
अड़ी और तग़ाफुल में जाँ खो गये
जो होते थे नामे गौहर पे फिदा
वफादार वो सब कहाँ खे गये?
वही लोग हक़ पर हैं सुन लीजिये!
सरापा जो गौहर की जाँ हो गये!
कोई क्या डरायेगा डनको भला
जो गौहर की तेग़ोसनाँ हो गये
बताये जो यूनुस ने अग्राज़े गौहर
मकासद सभी के अयाँ हो गये

४ जून २०००, लंदन इंगलैंड

बसाते ज़ीस्त

क्या बसाते ज़ीस्त हो! गर इश्क की बाज़ी न हो
जलवा हाए हक ही क्या! जब हक की ग़म्माज़ी न हो
कारवाने इश्क में हैं शहसवारे खह फक़त
क्या तकाज़ा इश्क का! जब हक की फैयाज़ी न हो
इश्क बीनी चीज़े दीगर, इश्क जाँ होना मुहाल
क्या तमन्ना इश्क की, जब इश्क अराज़ी न हो
इश्क का रिश्ता जुदा, ना बन्दगी, ना ही खुदा
लुत्फ क्या क़ानूने गशरअ, इश्क जब काज़ी न हो
रियाज़ुलजन्ना! एक जहाँ है दूर अक़लो फहम से
क्यों बताऊँ राज़े गौहर जब गौहर राज़ी न हो
खुद डुबोना आपका और खुद ही तिराना है क्यों?
राजे अव्वल, भेद मखफ़ी का कोई साझी न हो?
हक परस्ती, हक बयानी ठीक है यूनुस मगर
क्या मज़ा हो ऐसे हक का जिसमें हक साज़ी न हो

७ जून २०००, लंदन इंगलैंड
जन्नत बीबी के ख्वाब से मुतअल्लुका

अज़मते जानाँ

गौहर की ज़ात है बेशक ज़रूरते दौराँ
सिखाई जिसने ख़लाइक को फितरते यज़दाँ
खुदा से दूर नहीं कोई दौरे गौहर में
बस ज़रा चाहिए इंसाँ को हिम्मते मरदाँ
थाम लो दामने गौहर, पनाह लो गौहर की
अगर है चाहिए महशर में रहमते बाराँ
सबर आदत, तो तहम्मुल पसंद फितरत है
अगरच: रखते हैं बाज़ू में कुदरते यज़दाँ
अहले इस्लाम मरदे हक़ से भी
माँगते हैं ज़मानते कुरआँ

क्या बने उम्मते मरहूम का अब
जिसकी किस्मत है हालते पुरसाँ
तल्खो रंगीन है तारीख़ दीने मुसलिम की
हक़ बयानी पे कटे हाये सूरते खूबाँ
बता ऐ रुहे मुहम्मद, तू अपनी उम्मत को
गौहर के रूप में फिरती है सित्वते यज़दाँ
ग़ज़ल, क़सीदाओ नज़मो नसर सब तेरे लिये
बताये जायेगा यूनुस बस अज़मते जानाँ

२३ जून २०००, लंदन इंगलैंड

याद क्यों सताई हो

इस कड़े वक्त में तेरी ही मसीहाई हो
और तेरे प्यार की हर लहज़ा रहनुमाई हो
तुम अगर प्यार से देखो तो जिंदगी पाऊँ
वरना मरने की धुन समाई हो
इश्क मुझको ना सही तेरी नज़र में तो हूँ
गैर होता तो तेरी याद क्यों सताई हो
हाले दिल तुम से सिवा कौन जान पायेगा
तुम तगाफुल करो! तो किस जगह सुनवाई हो
दिल नशी! दिल की सदा सुनते हो क्या?
नफ्स के हाथों न हो जाये ख़सवाई हो
बेबसी इस क़दर कि अश्क रवाँ होने को हैं
तुम अगर इज्जे फुगाँ दो! तो क्या दुहाई हो
जानता हूँ कि आफरीन्श से है रब्ते रवाँ
ख़वाहिशे दिल कि! इस जहाँ में भी शनासाई हो
तुमने देखी तो है कुकनस की तड़प
दीजिये ऐसी तड़प जो न कभी पाई हो
एहतियातन ख़मूश रहता हूँ
वरना क्यों शक्ल ये मुरझाई हो
सोजे दिल फैल गया ग़ज़ल में ऐसे यूनुस
जैसे इल्क़ाए गौहर से ये ग़ज़ल आई हो

३ जुलाई २०००, लंदन इंगलैंड

नज़र

मुहुआ खूने दिल से बर आये
चाहे फिर मौत बेख़तर आये
आँख नाज़िर से नज़र बन जाये
मेरा मेहबूब जब नज़र आये
दिल महोव हो तेरे तख़ैयुल में
और तेरे प्यार से निखर जाये
तुम को सोचूं तो तुम में खो जाऊँ
तुम में खोकर मुझे क़रार आये
जब तुम्हें देखने की हाजत हो
दिल में चेहरा तेरा नज़र आये
कहते हैं दिल में तेरे रहता हूं
यही पैग़ाम आज फिर आये
मौत क्यों आये क्या मैं फ़ानी हूं
नामे गौहर पे हाँ मगर आये
तेरे क़दमों तले पनाह है मेरी
और यूनुस भला किधर जाये

१० जुलाई २०००, लंदन इंग्लैंड

जशने गौहर

जशने गौहर की मुबारकें
ये गौहर के दर की ज़ियाफतें
अहले गौहर की रिवायतें
अहले गौहर की सआदतें
है खुदावन्दों का तू खुदा, मरहबा गौहर, मरहबा गौहर
तेरी जुल्फे ख़म पे मैं झूम लूं
तेरे दस्तोपा को मैं चूम लूं
अहले गौहर की तूही नमाज़ है
तूही इनका दावाओ नाज़ है
है खुदावन्दों का तू खुदा, मरहबा गौहर, मरहबा गौहर
तेरे ग़म को मैं अपना ग़म कहूं
तेरे सारे जोरो सितम सहूं
तेरे दिल की तार की लैय बनूं
तेरे ज़ख़मों को भी करम कहूं
है खुदावन्दों का तू खुदा, मरहबा गौहर, मरहबा गौहर
अहले गौहर जो कहलाये हैं
तेरी ज़ाते अज़ली के साये हैं
दाएराए गौहर में आये हैं
खुद तेरे अपने सराहे हैं
है खुदावन्दों का तू खुदा, मरहबा गौहर, मरहबा गौहर
यूनुस बताये तो किस तरह
हुब्बे गौहर में मज़ा है क्या
ये मज़ा है जामे रियाज़ का
जोनहीं पिया तो नहीं जिया
है खुदावन्दों का तू खुदा, मरहबा गौहर, मरहबा गौहर

प्यार की सौग़ात

रियाज़े मन या रियाज़े जानाँ, दिल में आना आपका गुनचाए दिल का खिलाना, मुसकुराना आपका तू शमा है प्यार की और मैं हूं दीवाना तेरा मेरा दिल तेरा ठिकाना और समाना आपका किस नबी के रंग में रंगना, किस खुदा को पूजना तुझमें रंगना तुझमें खोना, पूजना भी आपका रियाज़ की नगरी में रहना प्यार की सौग़ात है प्यार करना प्यार देना है तराना आपका है समझना ख़ल्क़ का, और ये समझाना मेरा कोशिशें मेरी हैं लेकिन है फ़साना आपका अंबिया की क्यों सुनूं और क्यों बनूं मैं पारसा मैं बना आदम नहीं, हूं दीवाना आपका क्यों ग़मे दौराँ से डर कर मैं परेशानी सहूं ग़म गुसारीओ तसल्ली और ज़माना आपका कसमसाना रुह का और गुगुनाना दिल का है नग़मए यूनुस ये लेकिन है फ़साना आपका

३० नवम्बर २०००, लंदन

शहज़ादीए गौहरशाही आनिसा फरह नाज़ की ख़िदमत में

गौहर की नज़रों में मैं आ गई
अपने पिया के मैं मन भा गई
कैसी नज़र थी जो नहला गई
उनकी लजा से मैं शरमा गई
ये ज़िन्दगी कितनी बेज़ीस्त है
मरकर मैं तुझपे सकूं पा गई
ज़ुल्फ़ों के साये में तेरी हँसी
रम्ज़े फिना मुझको समझा गई
आरिज़ की लाली बुलाती रही
सांसों की उलझन सबा पा गई
दुनिया ने जब भी ढकेला मुझे
तो गौहर की बाहों में मैं आ गई
कैसी मुहब्बत कहाँ का जुनूं
तेरी इनायत ही काम आ गई
यूनुस तुझे क्या ख़बर कि उन्हें
उनकी सख़ावत लजा सी गई

८ मार्च २००९, लंदन

खह गुमनाम

कैसी जन्नत? कहाँ के हूरो कसूर?
नहीं, नहीं है, तेरे वास्ते शराबे तहूर
नहीं मकाम तेरा, खुल्द या फिरदौसे बरीं
तू है वासी वहाँ का, है जहाँ बस इश्को सुखर
तू बना आदमो इसराईलो इमरान नहीं
तू है वो कि, नहीं जिसकी ख़बर खुद तेरे हुजूर
तुझको क्या समझेंगे दीदारे खुदा के तालिब
तू वहाँ से है, जहाँ कुछ भी नहीं मस्तूर
तू था मदफून अज़ल से ही कबाए हक में
तेरे आने से हुआ, राज़े इलाही का ज़हूर
गौहरी राज़ है बन्दों का खुदा हो जाना
राज़ क्यों राज़ रहा, जब हो गया सपुरदे सतूर
अहले हक दीगर, अहले गौहर चीज़े दीगर
मा सरापा तालिबे हक, ओ मतलूबे हुजूर
रबूबियत की ज़द में है आले आदम तमाम
तू हर इक हद से परे, है जहाँ न रब न गुरुर
यूनुस हर राज़ मचलजता हुआ लब पे आये
लबकुशाई के लिये शाही इजाज़त हो, ज़खर

१५ अप्रैल २००९, लंदन

रम्जे शनासाई

इंसान के परदे में है किरदारे किबरियाई समझी है जिसे दुनिया, मेहदीओ गौहरशाही चाहा कि ला मकाँ से मौजूदे मकाँ जब हो सूरतगरी से अपनी, सूरत है फिर बनाई क्योंकर उसे पहचाने कोई अहले नज़र आखिर नज़्ज़ारा उसका कैदे नज़र से हुआ हरजाई मकरो फरेब इंसाँ कुछ कारगर नहीं है तदबीर, गौहरशाही ने कुछ ऐसी है फरमाई किस किस नबी को समझूँ किसको खुदा पुकारूँ जामे रियाज़ पीकर, देता नहीं सुझाई बाज़ू में बैठने को कुरबत जो समझले उस शख्स की हालत पे मैं देता हूँ दुहाई आँखों से दूर, दिल से जुड़ा, कुर्ब समझिये गौहर ने ये इक रोज़ मुझे रम्ज़ बताई यूनुस हिदायतों के लिये कोई तो मंज़िल हो मंज़िल न रहगुज़र कोई कैसा हूँ तमाशाई

२६ अप्रैल २००९, लंदन

जिन्से आदम

जो मिला ग़र्ज़ से मिला हमसे बेवफाई का क्या गिला तुम से जिन्से आदम है फितरतन बेवफा क्या तवक्को और क्या सिला तुमसे जब तेरे ख़मीर में है दग़ा फिर कभी होगा क्यों भला तुमसे आदमी, रब का दोस्त हो जाये कैसे पुर होता ये ख़ला तुमसे मरज़ीए हक जो कभी अज़ल पे हावी हो तो ना ख़लफ नफ़स से बिगड़ा ये फैसला तुमसे दिल जो गौहर ने मुस्तआर दिया मकरो ऐयारी से फिसला तुमसे इश्के गौहर, अमानतन देकर हम ये समझे कि है संभला तुमसे इश्क क्या बंदगी भी कर न सके गौहर कहते हैं बरमला हमसे अहदो पैमाने लाल बाग़ हैं क्या जोड़ना था ये सिलसिला तुमसे रेग़ज़ारे कोटरी में बाल अटे कि बने रुहानी काफिला तुमसे कहा खुदा ने सिसकती रुहें, बिलकते कलूब ऐ गौहर, पाएगी इंसानियत जिला तुमसे

हमको मनजूर था जो अहद हम खुदा से किये वरना हम जानते थे होगी क्या फलाह तुमसे बेवफाई की तेरी दास्ताँ है है तारीख़ी हाँ खुदा और मुहम्मद भी हैं नालाँ तुमसे यूं तो हम शाहे इश्क, मालिके तख़लीक भी हैं हाँ परस्तार मिले हमको दिलबराँ तुमसे हम समझते रहे जिसे मरहम वो था सीने पे आबला तुमसे लम्हाए फिकिर्या है यूनुस ये क्या तवक्को थी क्या मिला तुमसे

२८ अप्रैल २००९, लंदन

जुस्तजूए यार

जुस्तजूए यार में हस्ती को खोना चाहिये
मा सिवाए यार बस गुमगशता होना चाहिये
जो मिजाजे यार में आये वही हक् जानिये
नाजुकीए रम्जे गौहर को समझना चाहिये
क्यों बताऊँ ख़ल्क को, जो कि नहीं गौहर शनास
है जो गौहर आशना उसको बताना चाहिये
जिनको चुनना था वो रुहें कबकी गौहर की हुई
है भला इसमें कि बस खुद को समझना चाहिये
क्या वसीले से बने तारीकियाँ जब अज्ल हों
जो गौहर देदें उसी पे सब्र करना चाहिये
गर गौहर से मांग कुछ तो मांग ले जाते गौहर
इस तरह गुम कर कि खुद को गौहर बनना चाहिये
बस यही है इश्क और ये ही पयामे शौक है
आगहीए हस्ती का वाज़ेह करीना चाहिये
बज्में हस्ती में सदारत जब गौहर की हो गई
महफिले शाही में गौहर शाही होना चाहिये
दिल नज़र, जज़बात में पेवस्ता जब गौहर हुए
इस तरह गौहर की तस्बीह को पुरोना चाहिये
ख़ल्क में मशगूल होकर, जुस्तजू गौहर की है
है अबस जो जुस्तजू क्योंकर वो होना चाहिये
मैं हवाए शौक से कहता नहीं यूनुस कभी
जो समझ गौहर ने दी उसको समझना चाहिये

१३ मई २००९, लंदन

बयाज़े रियाज़

होके ज़म जाते गौहर में हो जा हमराहे रियाज़ कर हवाले जानो तन फिर देख क्या चाहे रियाज़ हाँ कसीदाओ ग़ज़ल भी ठीक है कहना मगर पर कहो ऐसी ग़ज़ल कि मन में बस जाये रियाज़ है खुदावन्दों का मौला जिसको हम मेहदी कहें ये समझदारी कहाँ थी पस ये समझाये रियाज़ ईसाओ इदरीस से अपनी शनासाई कदीम जिन्से अल्लाह से जुड़े हक्क ये फरमाये रियाज़ जिस्म ख़ाकी, शक्ल पापी, पर खुदाई सिफ्त है सूरते इंसाँ में मौला, है ये बंदाए रियाज़ थे अज़ल से, आस्तीने रियाज़ में मस्तूर ये फिर किया जब कस्दे दुनिया, आये हमराहे रियाज़ जबकि तुझ बिन कुछ नहीं, फिर किसके आगे ये झुकें एक किरदारें खुदा है वो भी सायाए रियाज़ क्या ग़रज़ इनको खुदा से, क्यों उसे ये जानते हैं तजल्लीए रियाज़, ये सालिके राहे रियाज़ जिस नगर से आये हम, वाँ का हर बासी खुदा जिन्से खुदा से हो तो बस लाज़िम है इक्तिदाए रियाज़ नाजुकीए मामिला फ़लमी अता तो कीजिये ताकि अहले हक्क भी समझें क्या है मनशाए रियाज़ है दलीले फ़ज़्ल कि ये ज़म हुए तुझमें रियाज़ वरना फिर कैसा करम, दिल में न गर आये रियाज़ क्या अज़ल और अबद जबकि ज़माना ही नहीं हम ज़माने से परे भी गुम थे बस राहे रियाज़ सब खुदाओं का खुदा सरदार है वो दिलखबा मस्लके यूनुस यही है, ये ही लिख जाये बयाज़

इक्विटदाए रियाज़

है दलीले फ़ज्ल कि ये ज़म हुए तुझमें रियाज़ वरना थे किस काम के जलवाए हक नाज़ो नियाज़ थे अज़ल से, आस्तीने रियाज़ में मस्तूर ये फिर किया जब क़स्दे दुनिया आये हमराहे रियाज़ क्या ग़रज़ इनको खुदा से, क्यों उसे ये जानते ये हैं तख़लीके रियाज़, इनका मुक़द्दर है रियाज़ जबकि तुझबिन कुछ नहीं, फिर किसके आगे ये झुकें एक किरदारे खुदा है वो भी सायाए रियाज़ जिस नगर से आये हम, वाँ का हर वासी खुदा जिन्से खुदा से होतो बस लाज़िम है इक्विटदाए रियाज़ सब खुदाओं का खुदा सरदार है ज़ाते रियाज़ मस्लके यूनुस रियाज़ और रियाज़ ही उसकी बयाज़

२६ मई २००९

फ़ल्सफ़ाए इश्क़

करीब जानके वोह दूरियाँ बढ़ाता रहा
फ़ल्सफ़ा इश्क़ का समझा तो इश्क़ जाता रहा
दवामे इश्क़ की ख़ातिर वो दूर होता गया
अगरच: आइनाए दिल में मुस्कुराता रहा
नज़र से दूर तो यक्लख़त कर दिया उसने
मगर वो ख़ानए दिल में भी घर बनाता रहा
वो दूर करके मुझे खुद भी हो गया बेचैन
रसूमे दुनिया बहरकैफ़ वो निभाता रहा
फ़िराको हिज्र के ग़म हाये जाँ उसी ने दिये
फिर मेरी आह पे शबेग़म भी वोह मनाता रहा
फ़साने मेरी मुहब्बत के कहके आलम को
मुझे वो रेगज़ारे अक़ल में भटकाता रहा
अहदो पैमाँ भी लिये उसने राहे उल्फ़त के
कहम कहम पे मुझे फिर भी आज़माता रहा
क्यों फ़रामोश करूँ उसके सितम हाये विसाल
उसका हर ज़ख्म सफहे दिल पे जगमगाता रहा
जिनकी ख़ातिर वो अपना चैनो सकूँ खो बैठा
उन्हीं से तंग पड़ा और झुंझलाता रहा
रियाज़ भूल जाने जैसी कोई चीज़ नहीं
उसी में खोता रहा जितना उसे भुलाता रहा
यूनुस उस दुश्मने जाँ से शिकायतें क्यों हो
खूँ की मानिन्द रगो पै में जो समाता रहा

७ जून, वरजीनिया अमेरिका २००९

तेरा भेद न पाये कोई

तेरा भेद न पाये कोई तुझको समझ न पाये कोई गोयाई में भी है ख़मोशी, राज़ न पाये कोई इश्के खुदा का करे उजाला अपना लहू जलाके इनके लहू की कुर्बानी से रब को पाये काई कभी पयम्बर कभी खुदा है इनके रूप में ऐ दिल इनको मिल कर सभी को पाये क्यों घबराये कोई खुदा कभी जो रूप में इनके आकर ग़ज़ब है ढाये इनका दिल भी तड़पे है पर देख न पाये कोई इनके दम से भरम खुदा का इनके दम से इश्क क्यों न भला फिर क़दमों में इनके गिर न जाये कोई इनको पाकर भूला रब को छोड़ दिया इस्लाम ये ही खुदावन्दों का खुदा है रब क्यों पाये कोई जो कुछ जाना मैंने अबतक वो कैसे समझाऊँ समझाने की बात अगर हो तो समझाये कोई रुहे रियाज़ है बयाज़ ये मेरी, राज़ हुए उरियाँ ग़ज़तें कहता हूँ पस यूँ कि समझ ही जाये कोई गौहर देखा सबने लेकिन रियाज़ रहा राज़े पौशीदा रियाज़ को क्यों कर जाने जबकि देख न पाये कोई रियाज़ असल ला रियाज़ नक़ल ये राज़ किया बेपरदा यूनुस रियाज़ रियाज़ करे ख़वाह समझ न पाये कोई

१६ जून, २००९ लंदन

तनहा

वो लड़ रहा है मसाइब से भला क्यों तनहा
वो मसीहा है जहाँ भर का कहो यूं तनहा
इब्न मरियम को भी है उनका सहारा मतलूब
वो ही ईसा का है सुनो, यूं कहना
किसमें हिम्मत है कि वह उनका मददगार बने
वह खुद शिकार है तरकीबे खुद का, यूं कहना
उनकी मनशा है इस्लाह ज़माने भर की
वरना क्यों सारे ज़माने का सितम यूं सहना
कोई पूछे कि गौहर शाही की हस्ती क्या है
हाँ कहो! पहलूए दिल से है सदा खूं रिसना
कौन कब जानिये उनसे क्यों जुदा हो जाये
रहे सलामत ये ज़ज्बे अन्दरूँ अपना
मसाहिबत के तक़दुस से बेखप़बर यूनुस
संगते रुह से हुआ तेरा अन्दरूँ उनका

५ अगस्त, २००९ लंदन

नज्मे हुदा

ज़िन्दगी बीतेगी अब जहादे मोसलसल की तरह
तुझको हर गाम पे पाया मैंने साहिल की तरह
ये मुहब्बत तो है एहसास कि मौजूद है तू
यही एहसास जावेदाँ है मेरे दिल की तरह
दूर होकर भी मेरे सामने तू रहता है
तू मेरी बज्म में मौजूद है महफिल की तरह
जब तेरे लम्स का एहसास मुझे होने लगे
तब तेरी याद है काटे मुझे कातिल की तारह
कैसी उल्फत, कहाँ का इश्क, क्या वफादारी
तू धड़कता है मेरे सीने में इक दिल की तरह
कोपिले आँख हुईं, तब हुए अबरु गुलाब
तू मेरी हस्ती में खिलता है एक कोमल की तारह
तू मेरी रुह का सिंधार और शबाब भी है
तू मेरे मन पे है छाया हुआ आंचल की तारह
तू जाने शम्सो कमर, ताबो चमक नज्मे हुदा
यूनुस जुल्मत का था मारा हुआ झिलमिल की तारह

१८ अगस्त, २००९ लंदन

ख़ामोश हैं लब!

ख़ामोश हैं लब और नज़र बोल रही है
चेहरे पे उदासी भी अब पर तौल रही है
ये कैसी मुहब्बत है कि वहशत भी ख़फा है
वीरानिए उनवाँ की ज़ुबाँ खोल रही है
अब कुछ तो मदावा हो इस आशुफ्तासिरी का
बेदाद रसी हालते जाँ झूल रही है
कहने को बहुत कुछ है पै क्योंकर वो बयाँ हो
जो राज़ मेरे दिल की ज़ुबाँ खोल रही है
हम जानते हैं उनको भी अशकों की ख़बर है
आँखों की नमी दर्दे गौहर तौल रही है
अशकों की ज़ुबाँ ठहरी जो मायूब तो यूनुस
अब हालते दिल, दिल की ज़ुबाँ बोल रही है

२१ अक्टूबर, २००९ लंदन

वफ़ा शिअारी है दीं हमारा

गौहर से गर तुम वफ़ा करोगे, तो हम भी तुमसे वफ़ा करेंगे
गौहर से गर तुम जफ़ा करोगे, तो हम भी तुमसे जफ़ा करेंगे
वफ़ा की ज़द में ये दोस्ती है, कि हुब्बे गौहर है कार फ़रमा
वो जिनसे रुठे तो हमसे छूटे, गौहर की हम इक्विटदा करेंगे
ये सारे रिशते, ये सारी खुशियाँ, गौहर से पैहम, गौहर से कायेम
गौहर से रिशता जो ना हो दायेम, तो ऐसे रिशते का क्या करेंगे
कभी तअल्लुक था तुमसे ऐसा कि जैसे कोई अटूट अंग हो
वजह शनासाई था जो रिशता, उसे अब ना आशना करेंगे
कराबतें दूरियाँ हुईं अब, कि जोशे उल्फ़त उतर गया है
न नाव उल्फ़त, न बहरे गौहर, अब ऐसे में क्या दुआ करेंगे
हैं हम मुक़लिलद मुहब्बतों के, वफ़ा शिअारी है दीं हमारा
ख़मीरे रुह में वफ़ा गुंधी है, वफ़ा की हम इन्तिहा करेंगे
वो जिनका शेवा था जाँ निसारी, बने शिकार अपनी ख़्वाहिशों के
शिकारी बनके हुमा के, यूनुस वो दिल के ज़ज़बों का क्या करेंगे

१२ अक्तूबर, २००९ वर्जीनिया अमरीका

मुख्खिये रियाज़

सारे आलम पर हुकूमत करता है साया रियाज़ का मैं नहीं कहता ये फरमाया हुआ है रियाज़ का हद्दे अहमद तो मुऐयन कर चुका है रब्बे अहमद सब हदों से है परे मख़फी ठिकाना रियाज़ का रियाज़ुल जन्ना, रियाज़ का आलम जहाँ बस रियाज़ हैं वो उसे देखे जिसे हासिल परवाना रियाज़ का क्यों गौहर के मकर में आये जिसे हासिल रियाज़ मैं हूं अ़ब्दे रियाज़, मेरा सिलसिला है रियाज़ का ऐ गौहर! जलवा दिखा आलम को, ज़ाते रियाज़ का बोल बाला दो जहाँ में हो अब आले रियाज़ का जो गौहर पे है फिदा उसपर करम की भीक हो रियाज़ से जो मुन्सिलिक हैं उनपे साया रियाज़ का हैं गौहर गोशाए खिल्वत में उन्हें समझाइये दिल गवाही देता है इल्का है दिल पे रियाज़ का मेहदीओ अवतार सब ही रूप हैं उस ज़ात के असल सूरत रियाज़ है, कहता है मुख्खिये रियाज़ का कीजिये उनपर करम जो दुआए मग़फिरत तेरी करें सारी कौमों की शिफ़ाअत करता है मुख़ड़ा रियाज़ का मैं जुदाई क्यों कहूं, हर लहज़ा की हमराही है लिख रहा यूनुस मगर हाँ कौल है ये रियाज़ का

१५ दिसंबर, २००९ लंदन, इंगलैण्ड

इमाम मेहदी गौहरशाही और “रियाज़ मस्तूर”

इक हस्ती गौहर शाही की जो सबको प्यारी लगती है
जिसका सूरज, चाँद पे साया है, जिसकी भोली सूरत लगती है
मख्लूक को फैज़्याब करे और सोहबते रियाज़ पे नाज़ करे
जिस हस्ती में गुम अहमद है जो इस दुनिया का मेहदी है
गौहर शाही इस आलम का लाभिस्ल मसीहा लगता है
हर कौम को जिसने प्यार दिया, हर कौम गौहर पे मरती है
अब गौहर गोशा नशीं हुए तो रियाज़ जमायेगा सिक्का

**जो वाबस्ता हैं गौहर से, उन लोगों की,
ऐ मुख़्विरे रियाज़, महजूब सी हालत लगती है**
हाँ रियाज़ असल, ला रियाज़ नक़ल, अब नक़ल हुई है ओझल
जो पेवस्ता हैं रियाज़ से हाँ अब उनकी हुक्मत लगती है
उन लोगों की क्या पूछते हो, जो हो गए जाते रियाज़ में ज़म
उन लोगों की शख़सियत में बस हस्तीये रियाज़ झलकती है
यूं तो गौहर भी मालिक हैं पर मालिकुल मुल्क बस रियाज़ ही हैं
अब ढूँढो रियाज़ को रियाजियों में अब इनकी गुफ्तगू चलती है
यूनुस भी था महजूब मगर जदू रियाज़ ने रियाज़ी कीती ए
असी भुल गये मेहदीओ गौहर नूं बस रियाज़ दी तस्बीह कीती ए

१५ दिसंबर, २००९ लंदन

सुख़न आलूद

हाले दिल, हाले बयाँ पर ही तो मफ्कूद नहीं
सैकड़ों ऐसे भी ग्रम कि सुखन आलूद नहीं
हिस्सो इदराक हो पैमानए ग्रम हाए हबीब
नाजुक अन्दाज़ ख़मूशी है जो मौजूद नहीं
सतहे दिल से हरारए ग्रम उठे तो दिल जाने
इज़हारे ग्रम किसी भी तौर उन्हें मनज़ूर नहीं
गैबते ग्रम रहे पोशीदा और तदबीर अ़याँ
तमाशए ग्रम कभी भी शेवए महमूद नहीं
ग्रमे महबूब मोतक़ाज़ीए मदावात फक़त
जाँ निसारी हो हरचन्द शरम आलूद नहीं
यूनुस क्या हाल हो उन साहिबाने हाल का भी
जो शरीके ग्रम हैं पै क़ातिले शहूद नहीं

१६ अक्टूबर, २००९ लंदन इंगलैन्ड

मिस्ले गौहर है भला कोई

अहले गौहर जो कहलाये हैं, दायेराए गौहर में आये हैं
तेरी ज़ात अज़ली के साये हैं, तेरे अपने खुद के सराहे हैं
ज़ौके तमाशा दिया जिन्हें, शौके वफ़ा भी दिया उन्हें
तल्कीं है जुल्मो जबर सहें, फिर भी गौहर को ही हक कहें
न हुआ न होगा न है कोई मिस्ले गौहर, भला है कोई
जिन्से खुदा है तो है कोई, मिस्ले गौहर नहीं है कोई
रंगे तरीकत बेकराँ तनवीरे मारफ़त लामकाँ
तदबीरे हिक्मत जिन्से जाँ, पै गौहर का भी है कोई गुमाँ
यूनुस को क्यों कर गुमान हो कि गौहर था और अब नहीं रहा
वो गया तो मैं कैसे हूं जी रहा,
मरहबा गौहर मरहबा गौहर मरहबा गौहर मरहबा गौहर

७ दिसंबर, २००९ लंदन

मिस्ले गौहर है भला कोई

निगारे आँसू

है निशाँ वस्ल का आँखों में ये प्यारे आँसू
इनके दीदार का है गुस्ल ये प्यारे आँसू
नफ्स का इज्ज़ा गुनाहों का कफ्कारा है यही
सजे रहें तेरी आँखों में कुंवारे आँसू
निकल के आँख से गिर जाये ज़र्मीं पर जो कभी
इक नई खेती बना दें ये तुम्हारे आँसू
रहमते बाराँ की मानिन्द उन्हें बहने दो
पयामे शौक का मनज़र हैं ये प्यारे आँसू
नक़श पिन्हाँ की नमूद इन्हीं से ताबीर है क्या?
बहरे सोज़ाँ का बने धारा, ये सारे आँसू
इश्क बारी से ही होता है तुख़्मे इश्क जवाँ
रियाज़े इश्क की आबयारी निगारे आँसू
इन्हीं के दम से है कायेम वजूद सोज़े मन
बस कि सरमायए जाँ हैं ये दुलारे आँसू
सजाओ पलकों पे मोती की तरह
है मुहब्बत का सहारा यही प्यारे आँसू
यूनुस कभी न आँख से गिरने देना
उनको लगते हैं तेरी आँख में प्यारे आँसू

चलिये यूनुस

चलिये यूनुस उस जगह कि मर्दों ज़न कोई न हो
रियाज़ की माला जपें, और रियाज़ बिन कोई न हो
रियाज़ का इसरार हो कि रियाज़ की तकरार हो
यूँ बने ऐसी ग़ज़ल कि जिसकी धुन कोई न हो
रियाज़ के जलवों में खोकर रियाज़ में ज़म हों सभी
रियाज़ ही मालिक हो सबका रियाज़ बिन कोई न हो
ना खुदाई का हो झगड़ा न नबूवत का फ़रेब
रियाज़ की नगरी हो लेकिन अमरे कुन कोई न हो
लानते दोज़ख न हो और लालचे उक़बा न हो
रियाज़ की ख़ालिस वफ़ा हो और बहिशती धुन न हो
रियाज़ की महबूबियत से महकी हो सारी फ़िज़ा
इन खुदा वालों के वों लानो तन कोई न हो
रियाज़ हो और रियाज़ से पैवस्ता जो भी है वो हो
रियाज़ ही माशूक हो और जानेमन कोई न हो
तुझको देखें, तुझको चाहें, तुझमें गुम नामो निश्वौ हो
रियाज़ की उलफ़त हुनर हो और फ़न कोई न हो
रातो दिन से तंग हूँ मैं, वक़त की ये कैद क्यों
तुझको हरदम देख पाऊँ , सालो सन कोई न हो
रात ही को तुझसे मिलना गर मुक़द्दर है मेरा
रात दायेम रात हो पस और दिन कोई न हो
रियाज़ मसजूदे इलैह हो और सजदे हो मेरे
रियाज़ ही की हो तजल्ली और किरन कोई न हो
तौफ़े काबा हीच है जबकि खुदा है बरतरफ
मन करे अब तौफ़े रियाज़, और मन काई न हो
मन वही जो मन हो तेरा, मन बने मंदिर ये मेरा
तन वही जिस तन में तू हो और तन कोई न हो
यूनुसे बा रियाज़ तुझको ये जहौं क्यों रास हो
तू वहीं को चल जहौं पर हमसुख्न कोई न हो

लंदन इंगलैंड.....21 दिसंबर 2001

इश्के रियाज़

निफाक नाम है दूर्द का, और इखतिलाफे अमल दिल
ईमानो मुहब्बत का मुकाम है पस वसल दिल
नूरे ईमान है गर दिल मैं तो बंदा मोमिन
मुहब्बत जॉगुज़ीं हो जाये तो है असल दिल
रिश्तये इश्क है इस रुह के ज़म होने का नाम
जुजे रुह ज़म अगर हो जाये तो है फ़सल दिल
मुहब्बत करने से होती नहीं, पर हो जाये तो हक है
इश्क होने से नहीं होता, हो जाये तो है नकल दिल
रुह गर तखलीक रुहे रियाज़ हो तो है रिश्तये इश्क
रुही रिश्ते की ये सौग़ात है पस अजल दिल
गर कोई रियाज़ से वाकिफ हो तो आशिक ठहरे
यूनुस यही ताबीर रियाज़ और यही है असल फ़ज़ल

लंदन इंगलैंड....25 दिसंबर 2001

मरहलाए इश्क़

मरहला इश्क़ का वैसे तो जॉ गुसल है मगर
सलामतीये नज़र भी कमाल का है समर
यूं तो अमवाल और असबाब लुटाते हैं हबीब
नज़र से फिर भी गिरे कोई तो बाकी है कसर
इस्तेहँौं मरहलावार और मंज़िलें बेशुमार
कभी अफ़्ज़ाल कभी इनफ़ास का करना है सबर
क्या तवोक़को थी, क्या उम्मीद तुमसे गौहर को?
सब ही का किब्र और इनाद ने किया है हशर
किसी पर ऐतमाद इतना किया था गौहर ने
हर मुहासबा से हो गया वो बेख़बर
कोई जो ऑख का तारा बनाप था गौहर की
वही फिर ऑख का नासूर बन गया बेख़तर
ऐतबार किसपे यहाँ कीजिये अब यूनुस कि
राख का ढेर, अलापे किब्र से होता है शरर

लंदन इंग्लैंड....28 दिसंबर 2001

ॐ खियों का झरोंका

झराकाये गौहर मफ्तूह हुआ है.....सबाए रियाज़ की ठंडी हवा है
ये ख़ारे नफ्स की कैसी चुभन है?.....नसीमे बादे गौहर की दवा है
चिरागे अक्से गौहर जल रहा है.....अंधरा गैरियत का जा रहा है
किसे मालूम गौहर जाने महफिल.....हुआ तो रंगे महफिल खिल रहा है
गौहर फानूसे नूरे कुल जहाँ है.....ये शोलाए गौहर का इक गुम्भू है
गौहर मीनारए अज़मत जहाँ है.....ये बंदा अज़मते गौहर निश्हो है
मेरी तनहाइयों में दर्द क्यों है?.....हुजूमे ख़ल्क पे ग़फ़्लत गुम्भू है
ये उल्फ़त क्या है यूनुस, कुछ पता है?.....ये ख़ूनाबे जिगर का इक फुर्ग़ो है
इश्क का कारवॉ अब कूच पर है.....कमंद डाले मुसाफ़िर जो जवाँ है
बादबॉ खुलने से पहले जो नशीनद हो गया..वही कश्तीये गौहर में बैठ कर रफ्तो रवॉ है
मुसाफ़िर को लुभाती है ये यूनुस.....तेरी आवाज़, जरसे कारवॉ है

अबूधाबी....2002

रहबरी मेरी

इश्के रियाज़ कर रहा है रहबरी मेरी
मिट जाओ नामे रियाज़ पर, है दिलबरी मेरी
करता हूँ तवक्कल मैं ज़ाते रियाज़ पे हर दम
करता है अब तो नफ्स भी पैरवी मेरी
कुछ ना मिलेगा कशफ़ से हालात जानकर
करता है रियाज़ दूर से ही ख़बरगीरी मेरी

गोशये तनहाई

गोशये तनहाई तेरे वासते हयात है
फितना परवर दौर की हर बात खुराफ़ात है
कर यकीं गौहर पे कायेम और दुनिया छोड़ दे
कल्बे मुज़तर, दीदएतर, इसकी इशारात है
दिल सहम जाता है मेरा जब कोई दावा करे
दावाए बेजा, यकीनन किब्र की सौग़ात है
मेरे मालिक, मेरे मौला, मेरे गौहर रहम कर
रहम की नज़रे करम हो आफ़तों की साअ्रत है
मेरे मालिक मैंन चाहा राज़ तेरे खोल ढूँ
राजत्र का खुलना तो पस फ़तहे दिलो जज़बात है
जिन दिलों में तू है बसता, किब्र कैसे हो वहों
किब्र का दावा तो इब्लीसियों की करामात है
दिल में है तेरे ठिकाना, गौहरे नायाब का!
दिल में गौहर का यूँ होना, हर हुदा की बात है
यूनुसे माले गौहर घबराता है क्यों इस क़दर?
तू गौहर का माल है पस तू गौहर के हाथ है

लंदन 15 मार्च....2002

खूए शाही

भेस भर के मेहदी का आया यहाँ मौलाए कुल
जिसका डंका बजता है कौनो मक्कौं, हर जाये कुल
मक़सदे गौहर हुआ कि हर जौहरे नायाब को
अपने मन के देश में कर दे उसे सरमाये कुल
बा इरादा हो के जब सूए ज़र्मीं आया गौहर
दूंढ़ने निकला वो इस खित्ते पे भी अ़नकाये गुल
चलते-चलते इक मुकामे इश्क वो गोया हुआ
मक़सदे पिनहों बता कर कहता था कि हाये गुल
खूए शाही दूंढ़ता था खूए इंसानी में वो
जिसको देखा इज्ज़ का पैकर, किया अबनाये गुल
इक तरीके फ़कर था सरमाया उसके हाथ में
यद्दे दोयम में लिये बैठा था वो ईकाये गुल
सह रहा था खामुशी से सब तमन्नाओं का खूं
फिर अचानक, एक दिन लौटा वो पस असनाये कुल
आकाये बेमिस्ल ने फेहरिस्त जारी कर ही दी
पस गुलामी सब्ज़ है आका से और इसलाहे कुल
बशर खूए शर है पस तू रियाज़ से बारियाज़ हो
खूए गौहर सीख ताकि हो सके अजमाए कुल
ख़रके आदम, खूए आदम में फ़ना रह जायेगा
खूए गौहर, खूए आदम से कहे इलकाये कुल
यूनुसे खुश बख्त रियाज़े हस्ती में महका रहे
वो रियाज़ी गुल कि जिसके हैं ये सब अजज़ाये कुल

लंदन 16 मार्च....2002

हाये अफ़सोस

हाये अफ़सोस तुझे पाके भी ये पा न सके
दिल झुका के भी मोज़ी नफ़्स झुका न सके
फ़ितना परदाज़ अनासिर की भेट चढ़ने लगे
शिकार साज़िशे दुश्मन हुए हक़ पा न सके
हैं दस्ते गिरेबॉ बाहम ही ज़ाकर्री
हक़ तो कुजा! ये लोग खुद को पा न सके
अब्बल तो दस्तरस में नहीं इनके कोई चीज़
इक मौक़ए वफ़ा था जो ये बचा न सके
बाहमी चपकलिश, कीना, इनाद इनका शिआर
यही वजह है कि नज़रे गौहर में आ न सके
जतन इसलाह के बेकार हो गये यूनुस
गौहर के नाम पर भी तुम इन्हें समझा न

मालिक गौहर की अपने बंदे को नसीहत

आनन फ़ानन मौत गर वाकै तेरी हो जायेगी
तेरी मुश्किल दूर और मंज़िल तुझे मिल जायेगी
गर संभल सकता है तू फिर दिल को समझा ले अभी
वरना फिर कौले अजल तुझपर सनद हो जायेगी
अपने इश्क बे करों को रोक तदबीरों से तू
वरना दुनिया इश्क से हासिद तेरी हो जायेगी
सजदे में सर रख दिया यूनुस ने और फिर ये कहा
ऐ मेरे मालिक! मुझे मंजूर है मौत आये भी

25 मार्च....2002 सुबह 8:30
लंदन इंगलैंड- एक ख़बाब से माखूज़
शायर क्या मालूम नहीं?

नख़ले गौहर

मक़सदे ज़ीस्त जबकि ठहरा तू
दिल की दुनिया में कर बसेरा तू
मौत गर तुझसे मिलने की है तदबीर
मेरे सूरज को कर अंधेरा तू
आगही ज़ीस्त की अगर दी है
तेरे अपने को करले तेरा तू
इंतेहाए फुर्गँ^१ है ख़ामुशी
अश्क का मुश्के रुह में खैरा तू
आइना देख, अक्से यार है तू
खुतूते जिस्म तेरे और अक्स मेरा तू
हाले दिल, हाले सरापा है तू
मेरी बेताबी का है सेहरा तू
अब चले आओ कि तरसे है निगाहे दिलबर
क़त्रए जॉ भी तू ही और जॉ का दरिया तू
नख़ले गौहर से प्यास भर यूनुस
गौहरी प्यास और है सहरा तू

25 मार्च 2002 लंदन

तुख्म तासीर रियाज़ी फ़ितरत

यादे गौहर में चश्म तर कीजिये.....ज़िंदगी अपनी यूँ बसर कीजिये
मोमिन आशिक कैसे बनता है?.....रद्दे ईमान से कुफ़ कीजिये
क्या हलावत है जुल्म सहने में?.....आशिकी का ज़ुरा सफर कीजिये
जैसे को तैसा होता आया है.....मकर की काट में मकर कीजिये
गर जवाँ मर्दी का दावा है तुम्हें.....इश्क की चोटी कोई सर कीजिये
हुब्बे मेहदी की शर्त है परचार.....साथ देने की पस फ़िकर कीजिय
इश्क सर पर सवार हो गर तो?.....फिर ना परवाये इश्को सर कीजिय
मक्सदे ज़ीस्त जबकि गौहर हो.....क्यों तमन्नाए बालोपर कीजिय
नरगिसी तुख्म इश्क का हो तो.....शमए सोंज़ों से फिर शजर कीजिय
शजरे गौहर की शाख़े तूबा पर.....सैराबिये इश्क सर कीजिय
इंतेहाए समर रियाज़ी गुल है.....शजर पेचों की क्यों फ़िकर कीजिय
तुख्म तासीर रियाज़ी फ़ितरत.....रियाज़ अरज़ी में कुछ शजर कीजिय
क्यों तही दामन समर ठहरू.....शजरे यूनुस में क्यों कसर कीजिय

1 दिसंबर 2002 लंदन इंगलैण्ड

मुनाजात

सूरते शायेरी, मुनाजाते गौहर शाही है
निदाए रियाज़ से अरवाह ने शिफ़ा पाई है
जिस्मे गौहर का तआख़फ़ करें तो यूँ कीजिय
अरज़ी अरवाहे मुहम्मद ने जगह पाई है
महे कामिल तेरे रुख़सार से मअ़मूर हुआ
हुस्न से तेरे हर इक चीज़ निखर आई है
सुरागे ज़ीस्त तेरे नाम पे मिट जाना है
जिंदगी ने तेरी ओंखों से जिला पाई है
तेरी अदाए नियाज़ फ़ी नफ़्सहे सहीफ़ा है
मसहफे रुए गौहर इश्क की सुराही है
आदमीयत तेरी दहलीज़ पर झुकी क्यों है
तेरी अ़ता से बशर ने भी की खुदाई है
फ़िज़ा के रंग तेरे जल्वए रुख़सार से है
चॉदो सूरज ने तेरे रुख़ से ज़िया पाई है
हजरे अस्वद तेरे रुख़सार की अमानत है
शफ़ीए कुल जहों तस्वीरे गौहर शाही है
मेहदी इक परदए अनवारे किबरियाई है
परदए नूर में वो ज़ात यहों आई है
यूनुस, गौहर को, दिल का जौहर बनाइये
कसौटी, दिल का मर्कों मेरा गौहर शाही है

बैंकाक 23 दिसंबर 2002

गौहरदारी....वफ़ादारी

गौहर शाही हम नवाई, गौहर शाही शनासाई
गौहर शाही मसीहाई, गौहर शाही दि रुबाई
गौहर शाही मेरे माही इल्तेजाए सेहरगाही
खिल्वते इश्क की साझत में मुझको देदे रअनाई
तेरा जलवा हो तेरी याद का आँखों से मेंह बरसे
तरी जल्वत में तेरा नक्श हो और तेरी तनहीई
शजरए इश्क की कोंपल में तेरी याद महके है
शोखिये दिल भी तेरे जलवए कामिल से शरमाई
वस्ल क्या चीज़ है? खुशबू को जैसे पूल की संगत
इश्क क्या चीज़ है? जिस्मों में जैसे रुह की पैराई
बंदगी क्या है? जैसे कोई ढूँढे अपनी फितरत को
मुहब्बत चीज़ है इक दिल की दूजे दिल में बू आई
अंता गौहर, ख़ता यूनुस, गौहरदारी वफ़ादारी
अदाए इश्के गौहर यार पे सौ जॉ से मैं वारी

19 जनवरी 2003 लंदन

खुदादारी....बेज़ारी

मुनाफ़िक है वही किरदार जिसमें दिल की बीमारी इश्के पिनहों अगर उरियों हो तो ठहरे रियाकारी अस्त और गुफ्त का हर हाल में रखिये तफ़ाउत कि इश्क के मामिले में करना पड़ती है ये होशयारी दरुने बतन का अस्पर है जिसको कल्ब कहते हैं मुराकिब हो के जिसपे रुह पस करती है सरदारी ख़ल्क मशगूल खिलकत में है और ख़ालिक मुख्ल्लक है खुदाई इस क़दर बेज़ार हो ता क्या खुदादारी? मुझे मालूम है अफ़साने तेरी शहनशाही के गौहर की भीक पर चलता है और दावा किबरियाई कहों से आई तुझमें खूए इश्क क्यों नहीं कहता? गौहर शाही के अहसानों का बदला क्या है खसवाई? तलातुम खेज मौजें मेरे बहरे इश्क में मच्लें तेरा नग़मा खुद सताई मेरा नारा गौहर शाही तेरी मायूसियों पर तरस खाकर मेरे गौहर ने ओढ़ कर परदए मेहदी निभाई पस ये दुश्वारी तेरी सहराए ख़ल्कत में कहों गुल इश्क के खिलते गौहर शाही ने शाही आब से पस की है अबयारी हाकिमे इश्क गौहर शाही, तू महकूमे फितरत है तेरा रोअ्र्बो जलाल नक्ले गौहर और जफ़ाकारी तेरी आदत रक़ाबत, तू हसद और किब्र का खूगर मुझे हासिल रफ़ाकत नक्शे गौहर की सनमदारी

मजमूअए ख़्याल

आईनए ख़्याल में देखा करूँ तुझे
लमहे तेरे ख़्याल के भेजा करूँ तुझे
रअनाइये ख़्याल, तखैयुल से है तेरे
रंगीं तखैयुलात से पूजा करूँ तुझे
मजमूअए ख़्याल है इक नुस्खए वफा
बादे फना भी तुझसे तेरी तमन्ना करूँ तुझे
आमद का तेरी हर घड़ी जलता रहे दिया
उम्मीद के चिराग से ढूँढा करूँ तुझे
आजाये मेरे यार तो ऑखों में बिठा कर
आज़ादे वक्त हो के बस देखा करूँ तुझे
दुनिया को मिले जो इन्हें मतलूबे ज़ीस्त हो
मेरी तो अर्ज़ है यही चाहा करूँ तुझे
तेरी जुदाई दर्द का इक बहरे ताब है
शोखी को तेरे नक्श का दरमों कहूँ तुझे
यूनुस फ़िज़ाए इश्क अभी साज़गार है
माशूके इश्क, इश्क का जल्वा कहूँ तुझे
आशिक वही है तेरे मुशरिक हो दर्द का
मिट जाये हस्तो बूद, ना परेशों करूँ तुझे
हस्ती अदम के खौफ़ से बेखौफ़ कीजिये
नापैद हो के तुझसे उभारा करूँ तुझे

पेशे नज़र है जल्वए माशूके जॉ गौहर
ऑखों से मुंतज़िर दिले सामौं करूँ तुझे
आवारगीये नज़र का कायेल नहीं हूँ मैं
देखा है तुझको तुझसे ही देखा करूँ तुझे
ऑखों को फ़क्त अपने नज़ारे की समझ दे
हर सिम्त हमा वक्त मैं देखा करूँ तुझे
रम्जे रबूबियत से मैं उक्ता सा गया हूँ
दे वो सबक कि मैं फ़क्त समझा करूँ तुझे
इस मसख़रा आमेज़ तख़लीके जहौं में
तेरे ख़्याले हक से शनासा करूँ किसे
अब यूँ कि दरमियान में तेरा ख़्याल है
तेरे ही वसीले से पुकारा करूँ तुझे
मिट जाये हर इक चीज़ बजु़़ अक्से यार के
अक्कासिये ख़्याल से ढूँढा करूँ तुझे
फुरसत मिले तो पूछ कभी दर्द की लज़्ज़त
ज़िंदों मिसाले ज़ीस्त में दरमों कहूँ तुझे
यूनुस खुदाई, खुद नुमाई और रियाकारी
इख़फ़ाये राज़ रख न हरासौं करूँ उसे

२३ दिसंबर.....फरवरी २००३

बैंकाक...लंदन

जुल्फे गौहर

जहाँ जुल्फे गौहर में ख़म देखते हैं
ज़माने के जुल्मो सितम देखते हैं
मेरी इन तरसी निगाहों से पूछो
उन्हें कितनी हसरत से हम देखते हैं
मुलाकात जब हो गौहर से किसी की
तो आँखों में इक बहरे ग़म देखते हैं
शबे वस्ल जब सामना हो गौहर से
मुसर्रत से आँखों को नम देखते हैं
फ़राग़त नहीं दीदे गौहर से जिनको
वो दुनिया को मिसले रसम देखते हैं
खुदा और मज़ाहिब से मतलब उन्हें क्या!
जो इश्के गौहर में इरम देखते हैं
सनागो तख़ैयुल है हर लमहा उनका
ख़्याबाने यारों सनम देखते हैं
सितम ढा रही है खुदाई तो क्या ग़म!
क्या कम है? गौहर का करम देखते हैं
दिखाते हैं मुख़ड़ा बजुज़ इक निदा पर
जब आँखों को मेरी वो नम देखते हैं
बना है हरीमे गौहर जिनका दिल तो
क़दम ब क़दम है वो हरम देखते हैं
ख़ताओं की बाबत मरी कुछ न पूछो
ख़ताकार उनका भरम देखते हैं
वही सजदागाह है हमारी ऐ दुनिया
जहाँ उनका नक्शे क़दम देखते हैं
तग़फ़ुल किया गर तुम याद आये यूनुस
भुला कर किसे कब सनम देखते हैं?
अमजद उन्हें क्या ख़ता की हो परवाह!
जो ज़िकरे सनम चश्मे नम देखते हैं

दौराने परवाज़ दुबई ता कोलंबो

22 फरवरी 2003

दिलबर याद आये हैं

कोई बात करो यूनुस, दिलबर याद आये हैं
सिसकी हैं फिज़ायें और सन्नाटे छाये हैं
ऑखों की तलब दिल की धड़कन है मेरा दिलबर
नज़रों में है वीरानी ग़म दिल ने बसाये हैं
महरुमे नज़ारा हूँ, मसरुरे तमन्ना कर
मेरे दिल ने सदा दिलबर नग़मे तेरे गाये हैं
उनका ही तसव्वुर है उनकी ही तमन्ना है
कुछ देर सही लेकिन वो ब़ज्म में आये हैं
भूलोगे जहाँ मुझको पाओगे वहीं दिलबर
मेरे दिल की दीवारों पर तेरे ही साये हैं
यूनुस नहीं गोया है एक आह दिले वीरों
कुछ उजड़े हुए गुलशन, मेरे दिल ने समाये हैं
ऑखों का तक़ाज़ा है दीदार मयस्सर हो
जब दिल को सदा तुमने खुद जलवे दिखाये हैं
आदत है इन ऑखों को तेरा मुखड़ा तकने की
इन प्यासी निगाहों में ऑसू भर आये हैं
बढ़ता ही रहा दिलबर इन ग़ज़लों में सोज़े दिल
तेरे इश्क में जल कर हुर्फ़ ग़ज़लों में समाये हैं
तुझे दिल ने पुकारा है सौसों ने बुलाया है
उलझी हुई धड़कन है सौस उखड़े जाये हैं
किस दम में निकल जाये यह जान बिना तेरे
यही खौफ़ मुझे लाहक यही वसवसे आये हैं
अब जलवा दिखा दीजिये अब माफ़ ख़ता कीजिये
बुझती हुई ऑखों का यह मुद्दुआ लाये हैं
अब ऑखें परेशौ हैं और सौस है उखड़ी सी
कुछ देर को ठहरो तो मेरे गौहर आये हैं
क्या दिल को दिलासा है इस हुरफ़े तमन्ना का
यूनुस की दुआओं से गौहर चले आये हैं

अप्रैल 2003

तसलसुले रियाज़

यह तसलसुले रियाज़ का है सिलसिला, गुल दिल में रियाज़ का है खिला
यह क्या हकाइके मर्गों ज़ीस्त हैं, पै रियाज़ की यह नहीं इस्तिलाह
ठहर जाओ तलातुमे बहरे ग़म, कि यह इस्तेहँ भी ख़तम हआ
जिन्हें डूबना था, वो बह गये, जो बचा वो अज़ली है मुआमिला
ये शर्तर ग़म हैं, हुसूल के, नहीं कोई इसमें हिजर का ग़म
जो रियाज़ के इश्क़ में जल गया वो रियाज़ के इश्क़ में है मुबतिला
ना नज़र का इसमें दखूल है, ना ज़िकर का इसमें सबूर है
दिले इश्क़ से जो जुड़ा तभी, इश्क़ का ये है दर खुला
दिया इश्क़ गरी का सबक जिन्हें, इन्हें इश्क़ के रुख़ भी सिखा ही दो
चले आओ छोड़के सिलसिला, जो बना है कोई दिल जला
किसे क्या ख़बर कि वो दास्तौं, जिसमें इश्क़ की हो सरगज़िश्त
जो खुले तो बयाज़े रियाज़ है, जो जले तो रियाज़ का है दीप जला
इन्हीं अस्तरों में प्रीत है, इन्हीं पैतरों में कमात है
इन्हीं अनक़रों में ज़म छुपा, इन्हीं अंतरों में वो है मिला
जो मिला किसी को निशाने राह, वो मसालेहत की नज़र हुआ
जो खोली किसी ने अगर जुबॉ, तो वो सूलिये इश्क़ पे है चढ़ा
यूनुस किसी को हो क्या गुम्भों, कि इश्क़े गौहर से है जिस्म में जॉ
मेरा नामों निश्चों मेरे पास है मरी हस्ती को ले वो गौहर उड़ा

15 मई 2003

हब्ले गौहर

हर नज़ारे में है गौहर पिन्हों.....चश्मे नाज़िर में गर गौहर आये
चश्मे ज़ाहिर की ये ख़राबी है.....गर न गौहर तुम्हें नज़र आये
हर हुदा के इमाम हैं गौहर....हर हुदा से गौहर नज़र आये
इसमें गौहर है रुह की तकसीर.....ज़िकरे गौहर से रुह निखर जाये
हर उज्जूए जिस्म को है दरकार.....इश्क की लै सब ही में भर जाये
हर नफ्स तेरे गीत गायेगा.....तब ही यूनुस का दिल सबर पाये
काम मेरा जहाने गैर में क्या?.....इश्के गौहर को हर नफर पाये
मुंतज़िर हूँ मैं उस घड़ी का जब.....इश्के गौहर में तन से सर जाये
यहीं दुआ है तेरी बारगाह में या गौहर.....हर नफ्स तेरे दिल में घर पाये
जिसका मअबूद गौहर शाही है.....वहीं सजदए गौहर कर पाये
बस कि तौहीद है इक ज़ात में ज़म होना ही.....उसी को देखना उस पर ही ज़ो बिखर जाये
बेदख़ल कर दिया ला रियाज़ को मेरे दिल से.....यहीं करम है अगर कोई इश्की गुर पाये
इश्क की लौ में जला जाता हूँ.....फिर भी क्यों रुह को सबर आये
मेरी मंज़िल है अदम फ़िल फ़नाए रियाज़ सनम.....नमूदे रियाज़ हूँ हस्ती में गर सिफर आये
मन चली ख़्वाहिशों की हो तकमील.....कल्बे यूनुस की लै सँवर जाये
इन्तेहाये गौहर में खोकर भी.....इब्तेदाये रियाज़ घर पाये
मंज़िलें कितनी अभी बाकी हैं.....रुह का बन कभी जसर जाये
जो वफ़ादारे गौहर शाही है.....गैरे गौहर से क्यों ना फिर जाये
सर झुकाने को हों मैं हाज़िर हूँ.....नक़रे गौहर मगर नज़र आये
तू वफ़ादारे गौहर शाही है.....लमहए इम्तेहों क्यों घबराये
अ़हदों पैमों हैं तेरे गौहर से.....हिफ़ज़े गौहर में क्यों ख़तर आये
हब्ले गौहर को थाम लो यूनुस.....तेरा मालिक ये तुझसे फ़रमाये

इज़ाफा किया गया 17 मई 2003 लंदन

गौहर-गौहर करे दुनिया

गौहर से इश्क करे और खुदा जुदा ना करे?
हमारे क़ल्ब पे ऐसा गुर्मौ खुदा ना करे
तड़प-तड़प के निकल जाये तन से खूँ सारा
गौहर-गौहर ही कहे दिल, खुदा-खुदा ना करे
खुदा गौहर की रज़ा, क्या? गौहर इस दिल की रज़ा
गौहर को छोड़ कर पाले रज़ा खुदा ना करे
वफ़ा के वासते जिसको बनाया गौहर ने
वो दिल वफ़ा न करे उनसे? क्यों वफ़ा न करे
गौहर के इश्क से पलकर जवॉ हो रुह जिसकी
वो दिल वफ़ाए गौहर की भी इलतिजा ना करे?
है इख़तियार हर एक दिल पे उसके ख़ालिक का
गौहर का बंदा किसी गैर की सना ना करे
खुदा का मरतबा रब है, रबूबियत क्या है?
रिश्तए इश्क रबूबियत से क्यों जफ़ा ना करे?
यूनुस वो जोत जगाओ गुमाने बातिल में
गौहर-गौहर करे दुनिया, खुदा-खुदा ना करे

20 मई 2003लंदन

नशेमन

सायए गैर नशेमन पे गवारा ना करूँ
तू ना मिल पाये तो बिन तेरे गुज़ारा ना करूँ
ख़ाक हो जाये मेरी सारी उम्मीदें लेकिन
बजुज़ गौहर मैं किसी को भी पुकारा ना करूँ
खुदा की मुझको ज़खरत नहीं मैं उनका हूँ
बुरा है मेरा मुक़द्दर तो सवारा ना करूँ
गौहर के नाम पे मारे कोई तो मर जाऊँ
खुशी से जान ढूँ गौहर से किनारा ना करूँ
जब तलक जिस्म मैं जॉ है गौहर की पूजा करूँ
खुदा ख़फ़ा है तो होता रहे परवाह ना करूँ
गौहर है इश्क़, बिना उजरते इबादत है
लालचे समर की उलफ़त मैं गवारा ना करूँ
यूनुस, गौहर को देखकर कहौं मज़हब ठहरे
गौहर को देख कर ज़िकरे खुदा खुदारा ना करूँ

20 मई 2003लंदन

तेरे जमाल से

तेरे जमाल से ऊँखों को नशा हो जाये
तेरे ख़्याल से लमहों को नशा हो जाये
मेरी हस्ती को तेरे अ़नूसरे अरवाह से गौहर
ता अबद रंगे गौहर बार नशा हो जाये
यूँ बिखर जाऊँ तेरी ज़ात के तख़ैयुल में
जिस तरह तितली फ़ितरते गुल में फ़ना हो जाये
यूँ बसेरा हो तेरा दिल में मेरे ऐ गौहर
जैसे शोला जले तो दीप शमा हो जाये
अजीब चीज़ है लज्ज़त ये शनासाई की
सबसे बेगाना हो हर चीज़ गुर्मा हो जाये
तेरे गुलाब को पा लूँ तो चुभन ख़ार की क्या!
निशाने यार से हर ख़ार निशौ हो जाये
निशौ ख़ता हो जिसका वो तीर ही क्या है
गौहर चलाये तो हर तीर कमाँ हो जाये
गौहर जमाओ वही महफ़िले इमररोज़ कभी
हर नफ़स देखकर तुझपे ही फ़िदा हो जाये
मौसमे इश्क़ का सावन उमड के आया है
ऐसी बारिश हो कि हर शज़र जवाँ हो जाये
हर दिले ख़ाली बना दीजिये अब कसरे रियाज़
या फ़िर ऐसा करो यूनुस को गुर्मा हो जाये

अक्टूबर 1999 अमेरिका....2 जून 2003 लंदन

गौहरियत

आज फिर क्यों ना मुसकुराये कोई.....अपनी पलके ना क्यों झुकाये कोई हुस्ने ला मिस्ल बेनिकाब आया.....शम्मए दिल को अब जलाये कोई आज फिर ज़ौके वफ़ा दे के गया.....अब वफ़ा से ना मुँह चुराये कोई दामने रुह से खून रिसता है.....फिर नया ज़ख्म ना दिखाये कोई कौन कहता है इश्क़ मुश्किल है?.....इस्मे गौहर से दिल बसाये कोई जुल्फ़े गौहर का बाब पढ़ लीजिये.....इश्क़ की रम्ज़ यूँ भी पाये कोई आदमीयत फ़सूने बातिल है.....गौहरीयत की लौ लगाये कोई गौहरीयत का, इश्क़ ईंधन है.....जानिबे रियाज़ तब ही जाये कोई यार की बात प्यार की बातें.....इन हक़्कायेक को समझ जाये कोई चश्मे गौहर से खूब बरसी नज़र.....तिशना क़ल्बी ना अब जताये कोई गौहरीयत अगर मक्सूद है तो.....मस्हफे रुख़ गौहर समाये कोई गौहरीयत में खू इबादत है.....खूए गौहर से जगमगाये कोई गौहरी रंग चढ़ाओ ऐसा कि.....रंग किसी का भी चढ़ ना पाये कोई इस्मे गौहर में राज़ पिनहा है.....इस्मे गौहर में सिमट जाये कोई यूँ पुकारो गौहर को उल्फ़त से.....बहरे गौहर में झूब जाये कोई यूँ बसे जानो तन में गौहर कि.....गैर की जगह रह ना जाये कोई इस्मे गौहर से है फरोगे इश्क.....काश यूनुस ये समझ पाये कोई

21 जून 2003 लंदन

तमसील

किस तौर बयों हो सके तारीफ गौहर की.....मद्देमुकाबिल हो कोई तमसील गौहर की जोदो सख़ा की शान कि एहसान खुदा पर.....महबूबे रब का सर उठा इक नज़रे गौहर थी जो वादए फरदा किया ख़ामोश निभाया.....बरदाश्त की मेअराज थी ये सबर गौहर की मेहदी का भेष भर के वो सूए जहों अआया.....दो-चार गुल खिले यही हालत है समर की सुन लो मज़ार हस्ती में मदफ़न है तो मुर्दा.....निकले कफ़न को फज़ङड़ के किसमत है शरर की मंजूम बयों इश्क की तालीम हो तो हो.....पढ़ता नहीं है बात कोई इश्क नसर की क्यों इब्तोलाये जुस्तजू रखती है मुज़तरिब.....वारफूतगी इश्क अ़ता नज़र गौहर की पैग़ामे इश्क जुस्तजू पैदा करे दिल में.....वो दिल कि जिसमें नज़र बसे सिर्फ गौहर की मुजरिम हूँ अगर कुछ भी कहूँ अपनी जुबॉ से.....आई गौहर से बात वही मैंने नशर की अदना कहूँ, बदतर कहूँ कमतर कहूँ अहकर.....पर किसके मुकाबिल है ये तहकीर बशर की यूनुस तू है अहकर इसे इज्जत से ना देखो.....ठोकर में रहे उफ ना करे हाये कसर की

30 जून 2003 लंदन

सूए अ़दम

क्या मुझे तुम कभी भुला दोगे.....मेरी बेताबियों मिटा दोगे सोजे इश्के गौहर में जलता हूँ.....और तुम क्या मुझे सज़ा दोगे पहले दिल मायेले सकूँ ही था.....अब सकूँ किस तरह दिला दोगे नार नमरुद की इस दुनिया को....कैसे गुलज़ार तुम बना दोगे ग़ज़लें मेरी ये शायरी तो नहीं.....नक़शे गौहर को क्या दुआ दोगे इश्के गौहर की लौ सलामत है....शम्मए गौहर को क्या बुझा दोगे जा रहा हूँ सूए अ़दम यूनुस.....हब्स बेदम को क्या हवा दोगे

25 मार्च 2002 लंदन

मुश्के दहन

लब हाये जामे रियाज़ से अंग-अंग में गौहर बसा
चश्म हाये बामे रियाज़ से संग-संग मेरे दिलबर चला
हमराज़े रुह दर खिल्वतम माशूके राज़े नियाज़ हस्त
चः हाले यक मैजे नफस, हाले मनम गौहर समा
अःकाए गौहर चः मी कुनंद मन अज़ बगोयम दिल बरम
हाले गुमों चः वारफ़तगी मन अंदरूँ गौहर हक़ा
मुश्के दहन बा दहने रुह, नक्शे तूई बाकी बचा
मुश्के गौहर की लै बनी तब मिसरए गौहर बना
धोका नज़र, नज़रें मकर, इंज़ाए रुह का है सबर
हूँ मुंतजिर हूँ वस्ले यार, इस दहर का गौहर नशा
ना वाकिफे लिल्लाहियत, ता हाले मुस्तगरक गौहर
गुम गश्ता अज़ मन गौहरम दानम नमी गौहर जुदा
मशकूरे मन अज़ इश्क तू, मजबूरे मन हाले ज़मों
तारीफ तू मुस्किन कहों नाराए मन गौहर सरा
यूनुस सगे गौहर जहों नतके मनम गुफ्तार तू
ता हशर मन गोयम बहक गौहर बया गौहर बया

3 जुलाई 2003 लंदन

विजय सत्र गौहर जी महाराज

दाना औं पानी और ये ज़िंदगानी अंजान अब मुझको लगने लगी है अपने पराये की सोहबतों सूरत ना जाने क्यों मुझको चुभने लगी है मुझको लगी है पिया के जिया की, जिया में अगन जाने कैसी लगी है अगन जो बुझाये पिया बरखा लाये बस ऐसी पवन मुझको सजने लगी है ये तूलानी ग़म की कोई क्यों मिटाये कोई मेरे मन के पिया को बताये जुदाई के लमहों की ये लॉम्बी नागिन मेरे मन को मनकों से डसने लगी है अमावस मिलन कब आयेगी साजन, कभों पार लाओगे अपने दुवारे तुरंत मोड़ लाओ मिलन का समय अब, कि सौंसों की उलझन भड़कने लगी है प्रियतम से पूछो कि मन सोज़ी क्या है, उसी को ख़बर जिसका घायल हुआ मन मनों कामनायें करो मोरी पूरी घड़ी मोरे जीवन की ढलने लगी है विजय हो विजय हो विजय सत्र गौहर की, अलापे है माला मोरे मन की यूनुस गौहर जी को ढूँढ़े हैं नैना हर इक पल, समय की दिशा अब बदलने लगी है

4 जुलाई 2003 लंदन

अंदाजे जुनूँ

कफ़न जुनूँ का मिला जिसको गौहर शाही से
पैराहन इश्क़ हुआ दीद की लैलाई से
अंकही बात भी कह देता है अंदाजे जुनूँ
खौफ़ रखता नहीं इस दुनिया की रुसवाई से
ढल गई फ़ितरते इंसौं, फ़रोगे इश्क़ हुआ
लहर बनी है बहरे इश्क़ की इठलाई से
हरमे इश्क़ में अहरामे जुनूँ बॉधा है
तवाफ़ पेशे नज़र रुह की पैराई से
बुझ गई जागती ओँखें तो यार को देखा
रुह बिसमिल बनी अजनबी हरजाई से

रुख़े आइना

वही झलके जो है पेशे आइना, दरे आइना कोई और है
मअ़कूस है रुख़े आइना पसे आइना कोई और है
पेशे नज़र मनजूर है जबकि नज़र पसे मंज़री
मंज़र की है ये दास्तौं दर्दी आइना कोई और है

5 जुलाई 2003 लंदन

नज़रे गौहर से जले है शम्मए गौहर

खुद गौहर ने जलाई है जो शमा फ़क्त उसकी लौ मैं बढ़ा रहा हूँ
रुखे यार की देके जुस्तजू उन्हें इश्क की शान पे चढ़ा रहा हूँ
रह गोश बदिल सुन ज़रा, नये राज़ दिल ये सुनाता है
उसी दिल को ख़बर है यार की उसी दिल की कही किये जा रहा हूँ
कभी रुह के मशवरे भी सुनता हूँ कभी इसकी कसक भी चुभती है
कभी अना की बेचैनी से निहाँ सूएदार चढ़ा जा रहा हूँ
कभी नफ़्स की फ़रमाइशें कि बैठाओ सोहबते यार मैं
कभी जिस्म के तक़ाज़ों पे चंद औसूं बहाये जा रहा हूँ
कभी सिर्फ़ के राज़े चमन और ख़फ़ी के असरारे जमीअ़
कभी अख़फ़ा के छुपे भेद मैं सरेआम किये जा रहा हूँ
यही पैगंबरों को हुई ख़लिश कभी वलियों को ये हुई फ़िकर
कभी हैरत हुई यूनुस तुझे ये मैं क्या किये जा रहा हूँ

5 जुलाई 2003 लंदन

रियाज़ी

गर मारना है मुझको तो ख़ंजर बदिल करो
ताकि गवाह हो नक्शे गौहर, क़त्ले दिल करो
है मारना यही कि मिटा दो रियाज़ी नक्श
मैं हूँ मुकैयद रमज़े गौहर, तुम पहल करो
अंदाज़ बताते हैं अ़दूए गौहर कि अब
जॉ निसारे रियाज़ से जंगो जदल करो
गौहर के नामे नामी पे हाजिर है मेरा सर
अब ख़ंजरो दिशनाम से गौहर वसल करो
लेनी है मेरी जान तो आगाह रहो तुम
गौहर है जाने दिल, मेरा दिल क़तल करो
ये जिस्म मुश्तेख़ाक मेरा, मुस्तआरे जहो है
रुहे रियाज़ में है मेरी रुह क़तल करो
मुज़रे नज़र हूँ, मैं मज़लूमे गौहर का
ज़ालिम, अब इंतेहाये जुल्म से अ़दल करो
है फ़ितरते इस्लाम में क़त्लाल अज़ल से
क़तल वफ़ाए रियाज़ पर तुम क्यों बदल करो
किस किस को बताऊँ कि मैं मक्तूले अज़ल हूँ
दूँढ़ो मेरे क़ातिल को, मेरी जॉ सहल करो
तलवारे रियाज़ लौहो क़लम रियाज़ है
यूनुस सुनो दुशनाम, मगर तुम फ़ज़ल करो

अँके गौहर

किसी के इश्क के रुलना, किसी वहशत से क्या कम है
ये आँखें बारे ग़म से रोयें, क्या ख़ूने जिगर कम है
मैं गुमराही हूँ बातिल हूँ, मेरा पेशा है इब्लीसी
सिवाये रियाज़ के मेरी ये गर्दन क्या कहीं ख़म है
मुझे बेचैन रखती है गौहर के लम्स की खुशबू
ये आँसू अँके गौहर हैं मेरी गर आँख पुर्नम है
बुझा दो आईनए दिल में जलती शम्मे गौहर को
इसी के कुफ़ से काफिर हुआ, क्या ये कुफर कम है
ना घबरा ऐ दिले नादों तुझे अब मौत आनी है
सनाए रियाज़ पे गर्दन कटे फिर तुझको क्या ग़म है
क़तरए कुफ़, बहरे रियाज़ में जब ज़म हुआ यूनुस
रियाज़े कुफ़ है तू अब भला तुझको क्या ग़म है

रक्से इश्क

रक्स कर रियाज़ी शरर पर तू महे महमिल नहीं जलवागर है फेलए गौहर तू बखुद फाएल नहीं लिख दे दस्तूरे रियाज़ और मैकशी को आम कर है मुख्खातिब कौले गौहर, शर कोई हायेल नहीं क्यों छुपायूँ राजे गौहर कुर्बतुस्साअः है गैब की उर्यनियों तो आमदे ज़ाएल नहीं पूछने से पेशतर ही राज उमडे आये हैं कर कुशादा गुफतगू, आदम में तू शामिल नहीं सुन ख़बर, मजबूर से, दिलचूर से महमूर से पूरी सुनले गर परेशानिये दिल हायेल नहीं कसरते आराईये ज़ौक ना समझ की है दलील जिंसे अल्लाह को ना समझे कोई क्यों मायेल नहीं तूरे गौहर दिल बना और चश्म नारे तूर फिर देख जलवे रियाज़ के इसमें तो कुछ मुश्किल नहीं ज़म किया इस रुह को रुहे रियाज़ में अब ग़म नहीं शोरे महशर, फ़िक्रे महशर की मुझे हलचल नहीं वो खुदा का ख़ौफ़ रखें जिनकी फ़ितरत ख़ौफ़ है मेरी फ़ितरत रियाज़ है, मेरी खुदा मंज़िल नहीं कुफ़ और इस्लाम की मानिंद शतरंजे जहाँ मैं परे हूँ आलमे जंगो जदल का दल नहीं कूफ़ियों की तर्ज़ पे फिरते हैं यॉ अब अहले दिल मैं हूँ इब्ने रियाज़ मुझको तो वफ़ा मुशकिल नहीं मैं राज़ों की इक गुथ्थी क्यों सुलझ पायूँ कभी मैं जहाने गैर की मुशकिल हूँ मेरा हल नहीं बहरे हस्ती कर चुका है ग़र्क बहरे वस्त में मैं हूँ मेराजे बहर में, वॉ कोई साहिल नहीं

सुअ़ते रफ़तारे रुह से देखता हूँ कसरे रियाज़ ये सफ़र रफ़तारे रुह का हुज्जते कामिल नहीं किस चमन के फूल हो, पूछे हैं गुलज़ारे वतन लालओ गुल की तरह हूँ, पर यहाँ का गुल नहीं रुयाए सादिका में रुए रियाज़ ढूँढ़े है मुझे क्या वहाँ से हूँ जहाँ पर कोई भी शामिल नहीं इक तिकोने मेहदी इस नासूत में उरियों हुआ मैं तिकोने रियाज़ में पूशीदा हूँ हासिल नहीं जिस तरह से चौद और सूरज तुम्हें मंज़ूर हैं उस तरह ही हम भी हैं मख़मूर पे महफ़िल नहीं क्यों तमन्नाए रुखे ज़ेबाए जॉ तुझसे करूँ तुझमें मिट कर तू ही ठहरा मेरा कोई पल नहीं गुफतगू मेरी परेशॉ हाल रखती है मुझे सरगुजिश्ते दिल कहूँ किस दिल से कोई दिल नहीं खुद नुमाई क्यों झलकती है तुम्हारे कौल से कौले गौहर फेले गौहर से है मैं फ़ाएल नहीं मेरी मंशा है रियाज़ और रियाज़ की मंशा हूँ मैं मैं रियाज़ी फ़िक्र हूँ मक्सूदे हाले कुल नहीं जब तलक ज़ेबाए हस्ती ब़ज़ में मौजूद है मैं हूँ इब्नुल वक्त मेरा लमहा कोई पल नहीं गुफतगूए यार बहलावा है दिल का हल नहीं मेरी मौजों के तलातुम ख़ेज़ बहरे रियाज़ में रियाज़ ही मल्लाह है मेरा अब कोई मुशकिल नहीं यूनुस नापैद ग़ोता ज़न है बहरे रियाज़ में जब उठाये सर तो कहना इसका कोई कल नहीं

बुते ज़िंदा का सनम

मेरा होना ही तेरा होना है.....तेरे होने को कोई क्या जाने तन मेरा, तेरे मन की परछाई.....मन मेरा क्या है, कोई क्या जाने सूह की खिलवतों में है जलवा.....कल्बे यूनुस में है सनम ख़ाने इब्तिदा जिसकी गौहर शाही है.....इंतिहा उसकी रियाज़ ही जाने जलवते गौहर, तख़िलयए रियाज़ ही था.....जलवए रियाज़ कोई क्या जाने तू बुते ज़िंदा का ज़िंदा है सनम.....मन के मंदिर को संत ही जाने तुझ्मी से हर्म है कायेम, तुझ्मी से बुत ख़ाने.....ये और बात है दुनिया ना तुझको पहचाने किसी के मन में समाये हो देवता की तरह.....और दिलो जान से कोई तुम्हें खुदा मारें बुते शरीर, शिवाला तेरी चिंगारी का.....सीमाए आत्मा है, नर्गो स्वर्ग के ख़ाने बुते पिंदार, शयातीन के स्वामी हैं.....मेरा मन नारे नर्ग ही जाने तू रियाज़ी है, शहबाज़ रियाज़े जनना है.....कल्बे मुद्दार तेरी परवाज़ से हैं बेगाने अल्लाह किस बुत का नाम है यूनुस.....हम हैं बस रियाज़ के ही परवाने

अलूरा

कसौं बसौं गुमौं समौं जेह चिस्त पिंदौं मिन.....नख़र बसर समर हस्तम नमी चः शमर्ये

कल्ब पे जिसके सब्ब हक हो तो.....वो भला हक से क्यों मुकर जाये
आमदे हक वजूदे हक से है.....बातिल गैर क्यों ठहर जाये
पस खुदी तुख्म का तकाज़ा करे.....आबयारी से फिर शजर आये
गौहरी तुख्म बतने कलबी में.....इश्के हमली से तिफ्ले नर आये

चूँ शूद अज़ इश्क दिल सलीम.....तभ्रम वस्लो इश्क रा बा शूद अलीम

वफ़ा के अहद से पहले जलाओ शम्मए इश्कतब ही ज़ियाए इश्क से वफ़ा समर पाये
फ़िराको हिज्ज है कतरा, वस्ल बहर होना.....शागिले बहर हो कोई तो क्यों हिज्ज आये
मिस्ले कतरा, फ़नाए बहर होजा.....रुह जाये तो इश्क घर पाये
माहिये गैर मनम मन वजूद माही हस्त.....मनम हस्तम वजूदे रियाज़ मन गौहर साये

ज़ंगार नफ़स चूँ शूद साफ़ियो पाक.....नक़शहा बीनी गौहर अज़ ख़वाबनाक

तलाशे कसरे रियाज़ छोड़, खुद कसर बन जा.....वजूदे रियाज़ से हर कल्ब बन कसर जाये
मनम दुख़बान हस्तम वल्नारूल इश्क वजूद.....मनम यक शोअूला अलूनारूल इश्कहू बर जाये
अला इला तूला औलम अअूलम अलूरियाज़.....अलूरा, अलिफ़ लाम रा रियाज़ तूनसर आये

गौहरी अज़् गौहर शाही

जीस्त मिस्ले आबगीना लम्हए हयात है
बे सबाती इस कदर कि लम्हा भर की साअत है
आदमीयत शरमसार, इंसानियत का कहत है
रुहानियत सर को झुकाये महवे शिकायात है
अहले बातिन मोख़मसह में तर्के इल्तेफ़ात है
गिर्यए अफ़लाक से सहमा ये मौजूदात है
नख़ले मीना सहराए जुल्मत कदा में दब गई
इक पयामी चीख़कर बोला ये क्या जुल्मात है
मैं भी था मौजूद ख़ामूशी से सब कुछ देखता
गोशए इश्क़म दरीं गौहर की करामात है
अरग़वानी इक शुआओ आई समाई जा बजा
आफ़ताबी उस शुआओ ने फिर कही इक बात है
गौहरी अज़् गौहर शाही, बे गौहर बेज़ारगी
नफ़्स की दीवानगी तख़मीना हिजाबात है
इक तजाहुल ये कि खुद से भी शनासाई नहीं
इक तग़ाफ़ुल ये कि खुद की मौत खुद के हाथ है
एक दिल ऐसा कि दलदल की तरह धैसता गया
एक दिल ऐसा जहौं बस इश्क़ की बोहतात है
एक नफ़्س ऐसा जहौं दावों का बोसीदा है ढेर
एक नफ़्س ऐसा जहौं हर लम्हा मुनाजात है
शायेरी होती नहीं यूनुस कभी अल्फ़ाज़ की
पैरहन अल्फ़ाज़ का है ख़ज़ने हिकायात है

अफ़अ़ाल निहाँ

तेरे अग्राज़ मुबहिम हैं तेरे अफ़अ़ाल निहाँ
तेरे असरार बहम हैं तेरी हर चाल फ़सॉ
तेरी पेशानी में पिंहों है ज़माने की नमूद
तेरे ख़्याल में मौजूद ख़दो ख़ाले ज़मा
कभी तू शोला, अनवारे तारगीये जहाँ
कभी तू वस्फे हमा ज़ात का इक ह़ाले गुमॉ
तू मेरे संग है हक़क़ा क़ब्ल अज़ वक्ते जहाँ
यूनुस फ़ैस जाये ना मुमकिन है इस जाले जहाँ

खूए शाही

भेस भर के मेहदी का आया यहाँ मौलाए कुल
जिसका डंका बजता है कौनो मक्कों, हर जाये कुल
मक़सदे गौहर हुआ कि हर जौहरे नायाब को
अपने मन के देश में कर दे उसे सरमाये कुल
बा इरादा हो के जब सूए ज़र्मीं आया गौहर
दूंठने निकला वो इस खिल्ते पे भी अनकाये गुल
चलते-चलते इक मुकामे इश्क़ वो गोया हुआ
मक़सदे पिनहों बता कर कहता था कि हाये गुल
खूए शाही दूंठता था खूए इंसानी में वो
जिसको देखा इज्ज़ का पैकर, किया अबनाये गुल
इक तरीके फ़कर था सरमाया उसके हाथ में
यद्दे दोयम में लिये बैठा था वो ईकाये गुल
सह रहा था ख़ामुशी से सब तमन्नाओं का खूं
फिर अचानक, एक दिन लौटा वो पस असनाये कुल
आकाये बेमिस्ल ने फेहरिस्त जारी कर ही दी
पस गुलामी सब्त है आका से और इसलाहे कुल
बशर खूए शर है पस तू रियाज़ से बारियाज़ हो
खूए गौहर सीख ताकि हो सके अजमाए कुल
ख़रके आदम, खूए आदम में फ़ना रह जायेगा
खूए गौहर, खूए आदम से कहे इलकाये कुल
यूनुसे खुश बख्त रियाज़े हस्ती में महका रहे
वो रियाज़ी गुल कि जिसके हैं ये सब अजज़ाये कुल

लंदन 16 मार्च....2002